# मिजबान

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

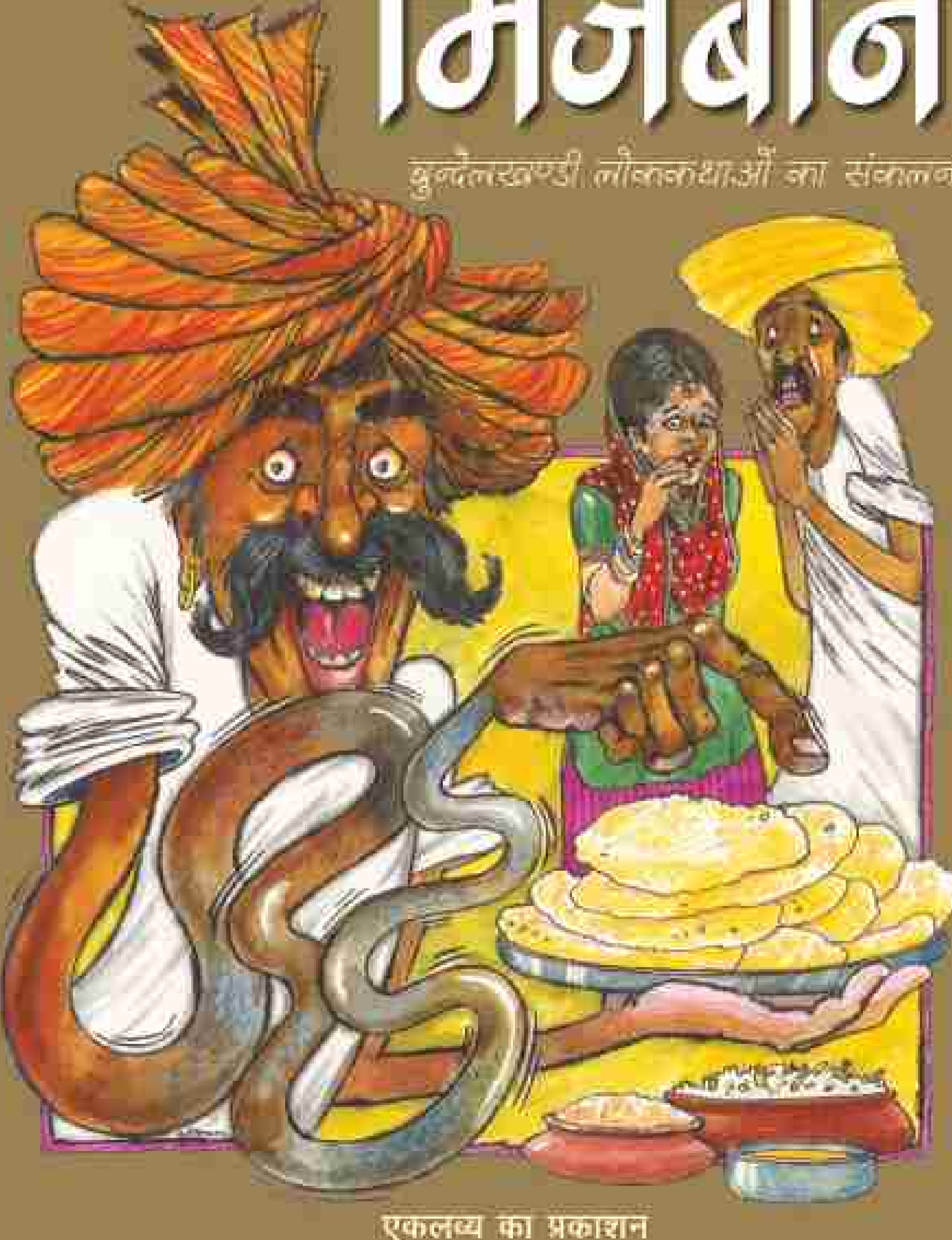

एकलव्य का प्रकाशन

# मिजबान

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

संकलन, पुनर्लेखन, सम्पादनः प्रदीप चौबे, महेश बसेड़िया

चित्रांकन एवं ले-आउटः अतनु राय

एकलव्य का प्रकाशन

**मिजबान**

MIJBAAN

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

संकलन, पुनर्लेखन, सम्पादनः प्रदीप चौबे, महेश बसेड़िया

**चित्रांकन एवं ले-आउटः** अतनु राय

©एकलव्य / मार्च 2010 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी तरह के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़ः 90 gsm मेपलिथो एवं 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

ISBN: 978-81-89976-48-4

मूल्यः 30.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोनः (0755) 255 0976, 267 1017

फैक्सः (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीयः books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 258 7551

# इस बुन्देलखण्डी कहानी संग्रह के बारे में...

किस्से-कहानी कहना और सुनना पुरातन काल से ही भारतीय संस्कृति की समृद्धशाली परम्परा रही है। अभी ज़्यादा समय नहीं बीता है कि जब हमारे ग्रामीण अंचलों में साँझ ढलते ही गाँव के किसी बुज़ुर्गवार की चौपाल पर बैठकें जम जाया करती थीं और चल पड़ता था किस्सा-कहानियों का ऐसा दौर कि कब आधी रात बीत जाती पता ही नहीं चलता था। ये सब बातें आज स्मृतियाँ ही बनती जा रही हैं। आजकल न तो वैसी चौपाल बची है और न ही वैसे किस्साकार। हाँ, यदि कुछ बचा है तो वह लोगों के मानसपटल पर अंकित धुँधली-सी छवि लिए हुए वे किस्से-कहानियाँ हैं जो वर्षों पहले हमने दादा-दादी, नाना-नानी अथवा अपने किसी बूढ़े-सयाने के मुँह से सुन रखी थीं।

ये कहानियाँ हमारी स्मृति से विस्मृत न होकर चिरजीवी बनी रहें, समय के धाराप्रवाह में बहकर खत्म न हो जाएँ, ऐसा ही प्रयास एकलव्य होशंगाबाद के बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम के तहत मैंने और मेरे साथियों ने किया है। इसके तहत गाँवों में कहानी कार्यशालाओं का आयोजन कर पुराने किस्साकारों से सम्पर्क साधा गया और उन्हीं की ज़ुबानी कहानियाँ सुनकर संग्रह हेतु चुनी गईं हैं। हम चाहते हैं कि ये कहानियाँ अपने बुन्देलखण्डी स्वरूप में ही बच्चों एवं वयस्क पाठकों के समक्ष पहुँचें ताकि इनकी मौलिकता और भाषाई लालित्य बना रहे।

इस संकलन का मूल उद्देश्य बिखरी हुई कहानियों को समेटकर इन्हें अलग-अलग प्रान्तों के बच्चों तक पहुँचाना है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में इन कहानियों के माध्यम से शाला में पठन-पाठन और समझने का माहौल तैयार करना है।

मैं उन सभी साथियों का आभारी हूँ जिन्होंने इस संकलन में आगे बढ़कर सहयोग किया। इन कहानियों को बार-बार सुनकर हमारा हौंसला बढ़ाने में होशंगाबाद ज़िले में चल रहे पुस्तकालयों के बच्चे, उनके पालक और एकलव्य होशंगाबाद के साथी सी.एन. सुब्रह्मण्यम शामिल थे। इसके अलावा श्री रामभरोस शर्मा, शा. प्रा. शाला मारागाँव, श्री रोहित शुक्ला, शा. प्रा. शाला सतवासा, श्री अजय दुबे, शा. प्रा. शाला ई. जी. एस सतवासा, श्री मनोज साहू, शा. प्रा. शाला बछवाड़ा, श्री अंजनी कुमार दीवान, शा. प्रा. शाला पीपरपानी, श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत, शा. प्रा. शाला सर्राकेसली, श्री गंगाराम सोनिया, खुटवासा, श्री रामभरोस नामदेव तथा श्रीमती जया बसेड़िया, होशंगाबाद ने इस पूरे काम में तरह-तरह से मदद की है। हम इन सभी के आभारी हैं।

इन कहानियों में बहुत रस है, बहुत-से स्वाद हैं। आइए, हमारे मिजबान बनकर इनका आनन्द लीजिए।

प्रदीप चौबे
एकलव्य, होशंगाबाद

# क्या-कहाँ...


| | | |
|---|---|---|
| 1 | मिजबान | 5 |
| 2 | मिन्दो मेंढकी की कहानी | 7 |
| 3 | जेंसे को तेंसा | 10 |
| 4 | लकटकिया | 13 |
| 5 | लल्लू चोर | 16 |
| 6 | जादुई संख | 19 |
| 7 | पत्ता भर भत्ता | 22 |
| 8 | दिल्ली की गप्प | 25 |
| 9 | चिड़ा-चिड़ी | 28 |
| 10 | मेहनत को फल | 30 |
| 11 | पण्डा पहलबान | 32 |
| 12 | महाठग | 35 |


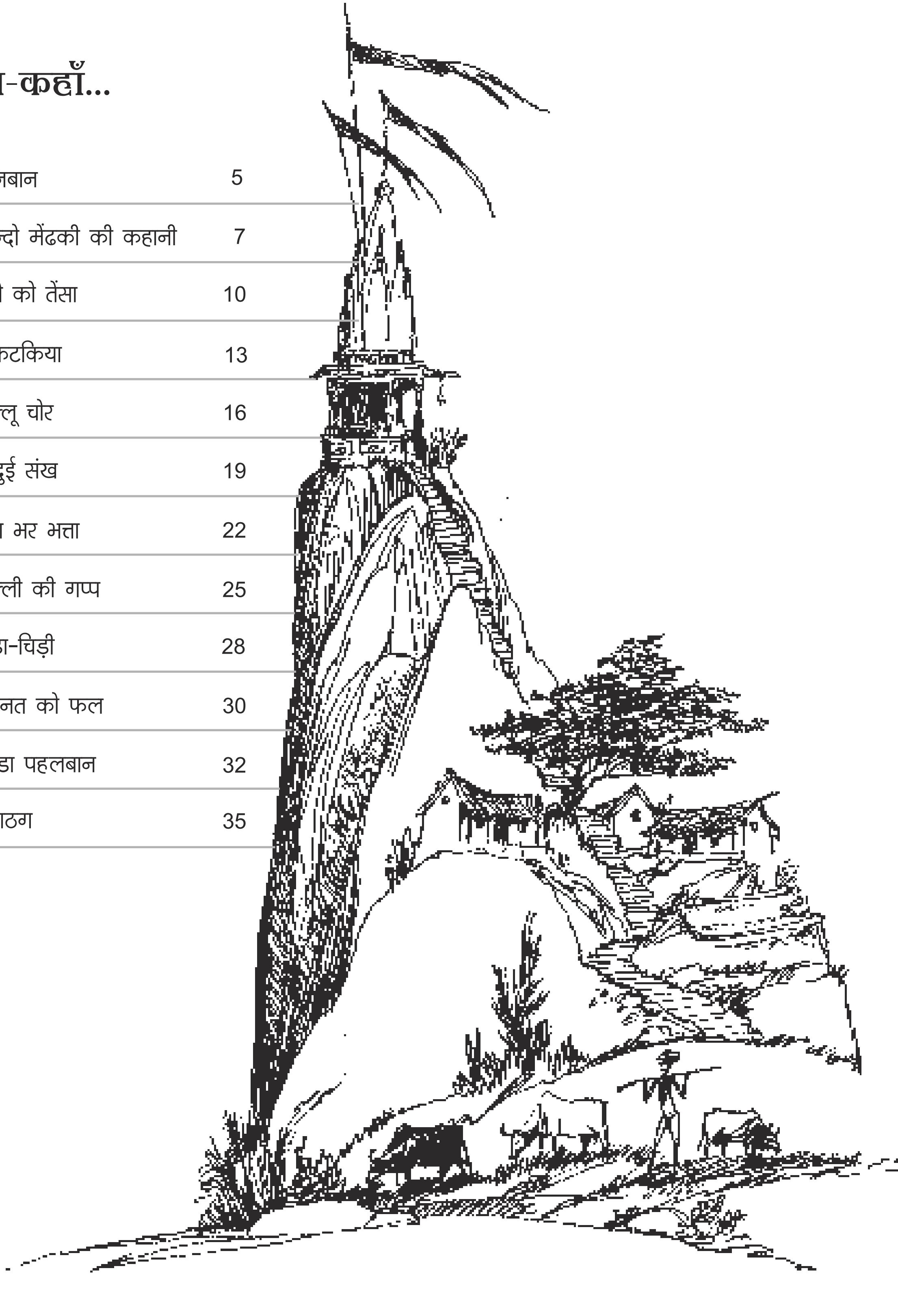

1

# मिजबान

एक परबार में पति-पत्नी रहत थे। दोई बड़े प्रेम से अपनो जीबन बिता रए थे। एक बार का भओ – बिनके घर मिजबान आए, मिजबान आए तो दोई बड़े खुस भए। बिनको सुआगत करो। कई, "भोत दिना बाद आप आए हें।" मिजबान हे जलपान करबाओ।

दिन डूबे बे जान लगे तो पति-पत्नी ने कई, "ऐंसे केंसे जे हो! बिना रोटी खाए हम नईं जान दें।" भोजन के लाने बिन्हें रोक लए। मिजबान बड़े खास थे, जासे बिनके लाने एक से एक पकबान बने। बिन्हें जित्ती भी खाबे की चीजें पसन्द थीं बिनमें सबसे जादा पसन्द थे पापड़! भोतई जादा!! अति से जादा!!! अदि खाबे में पापड़ मिल जाएँ तो बे बड़े खुस।

थारी परस दई तो मिजबान हाथ-मों धोके खाबे बेठ गए। थारी में पापड़ नईं देखके बिन्हें लगो की बाद में पापड़ परस हें। पर जब पति ने हाथ जोड़के कई, "चलो भइया जेबो सुरू करो," तो मिजबान को मन बेठ गओ। काय से पापड़ बने थे, पापड़ों की थारी बिन्हें चोंका में धरी दिख भी रई थी, पर बे सरम के मारे कछु बोले नईं। पति-पत्नी सुइ पापड़ परसबो भूल गए थे। पति भोजन परसन लगो ओर पत्नी ताती-ताती रोटी बनान लगी। मिजबान भोजन करन लगे पर ले देके बिनको ध्यान पापड़ों पेई चलो जाए। सिंके पापड़ चूल्हे के पास धरे थे, बे ऊँचे-ऊँचे फूले-फूले दिख रए थे।

मिजबान ने बड़े रूचके सब चीजें खाईं – भजिया, बरफी, लड्डू, खीर-पुड़ी; मगर बिनको ध्यान ले देके पापड़ों पेई जाए। बे सोचें अदि में पापड़ नईं खा पाओ तो काहे की मिजबानी ? बो मनई-मन सोच रओ, फिकर कर रओ की भइया-भोजी हे पापड़ परसबे की अब ध्यान में आहे तब ध्यान में आहे। जिनने धीरे-धीरे खाओ। पर जब समझ में आई, बिन्हें याद नईं आ रई तब बाने जुगत लगाबे की सोची, जासे पापड़ खाबे मिल जाएँ। बाने कई,

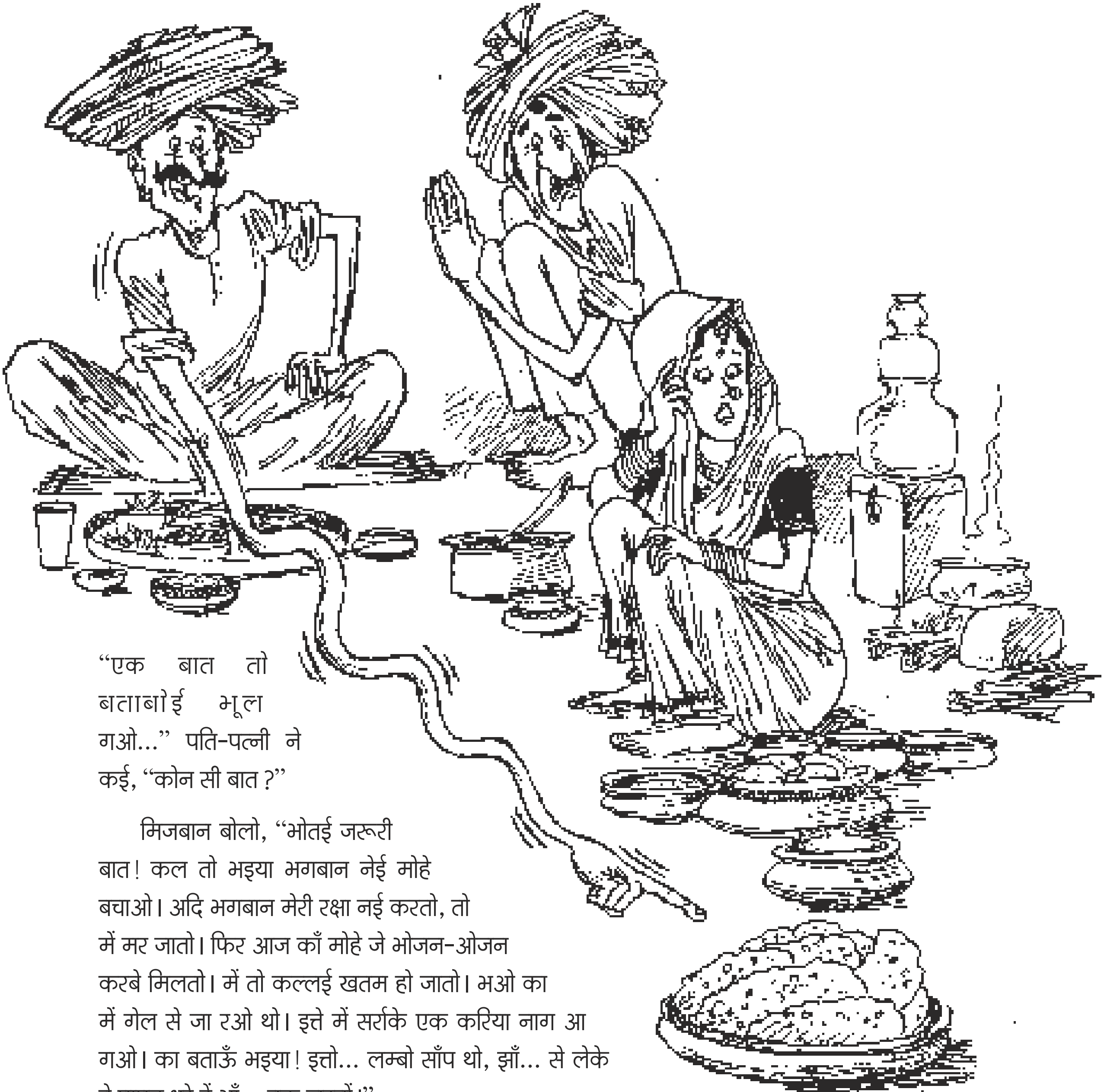

"एक बात तो बताबोई भूल गओ..." पति-पत्नी ने कई, "कोन सी बात?"

मिजबान बोलो, "भोतई जरूरी बात! कल तो भइया भगबान नेई मोहे बचाओ। अदि भगबान मेरी रक्षा नई करतो, तो में मर जातो। फिर आज काँ मोहे जे भोजन-ओजन करबे मिलतो। में तो कल्लई खतम हो जातो। भओ का में गेल से जा रओ थो। इत्ते में सर्राके एक करिया नाग आ गओ। का बताऊँ भइया! इत्तो... लम्बो साँप थो, झाँ... से लेके बे पापड़ धरे हें भाँ... तक लम्बों।"

जो बाने हाथ से इसारो करो पापड़ की थारी तक, तो पति-पत्नी एक साथ बोले, "अरे अपन पापड़ परसबो तो भूलई गए।" मिजबान ने कई, "अब रहन दो।" पति-पत्नी बोले, "ऐंसे केंसे रहन दें? जे तो खानेई पड़हें।" मिजबान ने कई, "अच्छा तो अब पापड़ों की थरिया लेई आओ।"

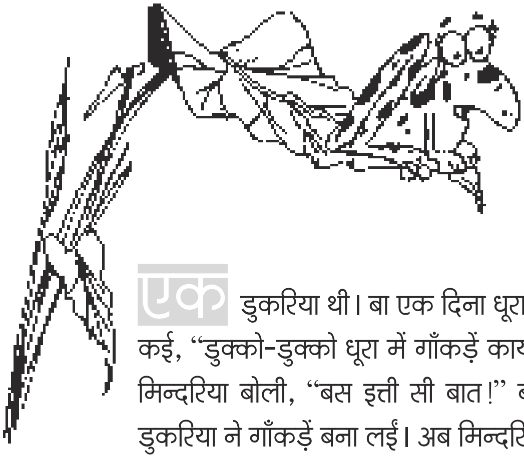

2
# मिन्दो मेंढकी की कहानी

एक डुकरिया थी। बा एक दिना धूरा में गाँकड़ें बना रई थी। इत्ते में एक मिन्दरिया भाँ आई। बाने डुकरिया से कई, "डुक्को-डुक्को धूरा में गाँकड़ें काय बना रई हे?" डुक्को बोली, "बिन्ना, मेरे पास लकड़ी कण्डा नईहाँ।" मिन्दरिया बोली, "बस इत्ती सी बात!" बा जंगल गई ओर भाँ से लकड़ी-कण्डा लान के डुकरिया हे दे दए। डुकरिया ने गाँकड़ें बना लईं। अब मिन्दरिया डुकरिया की जा गाँकड़ पे कूदे बा गाँकड़ पे कूदे। तो डुकरिया बोली, "मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी गाँकड़ों पे काय कूद रई हे?"

मिन्दरिया बोली, "जंगल जानी लकड़ी लानी,

लकड़ी मेंने तोहे दीनी,

तू का मोहे एक गाँकड़ न देहे?"

डुकरिया बोली, "ले बिन्ना रुक, गाँकड़ ले ले।"

मिन्दरिया गाँकड़ लेके आगे जात हे। बाहे गेल में एक कुम्हार दिखो। बो घेला बना रओ थो, उतई बाको मोड़ा बेठो भेंक रओ थो। मिन्दरिया बोली, "दद्दा जो मोड़ा काय रो रओ हे?" कुम्हार बोलो, "जो भूँको हे।" मिन्दरिया ने बाहे गाँकड़ दे दई। मोड़ा मोंगके गाँकड़ खान लगो। अब मिन्दरिया कुम्हार के जा घेला पे कूदे बा घेला पे कूदे। कुम्हार बोलो, "मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरे घेलों पे काय कूद रई हे?"

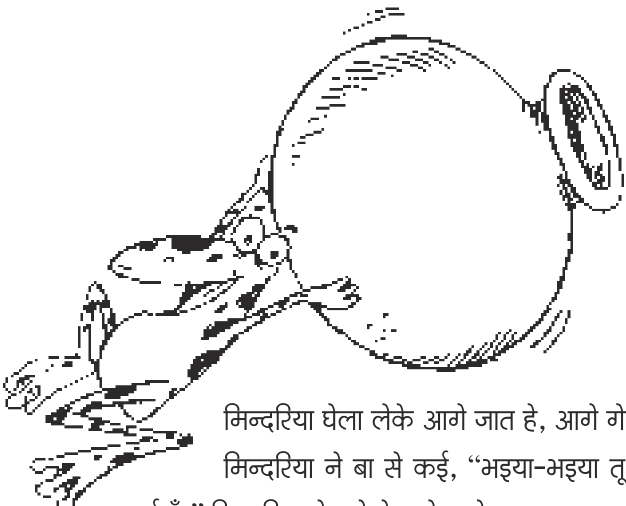

मिन्दरिया बोली, "जंगल जानी लकड़ी लानी,

लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,

डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,

गाँकड़ मेंने तोहे दीनी,

तू का मोहे एक घेला न देहे?"

कुम्हार बोलो, "ले बाई, घेला ले ले।"

मिन्दरिया घेला लेके आगे जात हे, आगे गेल में एक गुआला मिलत हे। बो छन्नी में भेंस दुह रओ थो। मिन्दरिया ने बा से कई, "भइया-भइया तू छन्नी में दूध काय लगा रओ हे?" गुआला बोलो, "घेला नईहाँ।" मिन्दरिया ने बाहे घेला दे दओ। अब बा गुआला की जा भेंस पे कूदे बा भेंस पे कूदे।

गुआाला बोलो, "मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी भेंसों पे काय कूद रई हे ?"

मिन्दरिया बोली, "जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,
डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,
गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,
कुम्हार मोहे घेला दीनी,
घेला मेंने तोहे दीनी
तू का मोहे एक भेंस न देहे ?"

गुआाला बोलो, "ले, जा भेंस ले ले।"

मिन्दरिया भेंस पे बेठके चल दई। आगे गेल में बाहे आम के नीचे राजा बेठो मिलो। बो सूखो भात खा रओ थो। मिन्दरिया बोली, "राजा-राजा तू सूखो भात काय खा रओ हे ?" राजा बोलो, "घी दूध नईहाँ।" मिन्दरिया बोली, "ले, जा भेंस ले ले।" अब मिन्दरिया राजा की जा रानी पे कूदे बा रानी पे कूदे। रानिएँ डर के मारे रोन लगीं। राजा बोलो, "मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी रानियों पे काय कूद रई हे ?"

मिन्दरिया बोली, "जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,
डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,
गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,
कुम्हार मोहे घेला दीनी,
घेला मेंने गुआाला हे दीनी,
गुआाला मोहे भेंस दीनी,
भेंस मेंने तोहे दीनी,
तू का मोहे एक रानी न देहे ?"

राजा बोलो, "ले बाई, जा रानी ले जा।" मिन्दरिया रानी के संगे चल दई। आगे गेल में बाहे बाजा बजाबे बारो मिलो। बो बेठो-बेठो रो रओ थो। मिन्दरिया बा से बोली, "काय भइया तू काय रो रओ हे ?" बो बोलो, "मेरी लुगाई नईहाँ।" मिन्दरिया ने बाहे रानी दे दई। अब मिन्दरिया बाके जा बाजे पे कूदे बा बाजे पे कूदे। बाजा बारो बोलो, "मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरे बाजों पे काय कूद रई हे ?"

मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,

लकड़ी मेंने डुक्को दीनी

डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,

गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,

कुम्हार मोहे घेला दीनी,

घेला मेंने गुआला हे दीनी,

गुआला मोहे भेंस दीनी,

भेंस मेंने राजा हे दीनी,

राजा मोहे रानी दीनी,

रानी मेंने तोहे दीनी,

तू का मोहे एक बाजो न देहे ?”

बाजा बारो बोलो, “ले बाई, जो बाजो ले जा।”

मिन्दरिया बाजा लेके चली। आगे गेल में बाहे पीपर को भोत बड़ो पेड़ मिलो। बा उतई सुत्तान लगी। इत्ते में भाँ भड़या आ गए ओर बे सब चोरी को सामान धरती पे फेलाके हिस्सा बाँटो करन लगे। मिन्दो ने आओ देखो न ताओ जोर-जोर से बाजा बजान लगी। भड़या डर के मारे भग गए। असफेर के गाँओं बारे भगे-भगे आए। जिनके इते चोरी भई थी, बिनको सामान मिन्दो ने लोटा दओ। सबरे गाँओं बारे मिन्दो की जय-जयकार करन लगे!

# 3
# जेंसे को तेंसा

एक माताराम थी, बाको एकई मोड़ा थो। जब मोड़ा बड़ो हो गओ तो माताराम ने मोड़ा को धूमधाम से ब्याओ कर दओ। माताराम ने मोड़ा के लाने किराने की दुकान भी खुलबा दई। बढ़िया दुकान चले, काय से गाँओं में एकई दुकान थी। बा से घर को खरचा चले।

मनो भाग से बहु भोत तेज निकरी? मोड़ा जब दुकान पे जाए बहु माताराम हे भोतई परेसान करे। कुल मिलाके जित्ती जादा सास की आतमा दुख सके बा उत्तो दुख पोंहचाए। माताराम इत्ती समझदार थी कि बा मोड़ा हे कछु नईं बताए। माताराम ने सोची अगर में मोड़ा हे बताहूँ तो बेकार की असान्ति हुए। ऐसी सोच के जा बात हे मन मेई रखे। मोड़ा बड़ो समझदार थो। माताराम हे अनमनी देखके जा जरूर समझ गओ की कछु गड़बड़ हे। एक दिन का भओ, बहु ने सास से कई, "का अदि मेंने तोहे मुण्डी ने करबा दई तो में अपने बाप की ओलाद नईं।" ऐंसी बहु ने जिद्द ठान लई। सास ने भी बहु से कई, "ऐंसे कंसे मुण्डी करबाहे देख लेहूँ तोहे।"

एक दिन बहु ने भोत नाटक-नोटंकी रची। बाने अपनी तबियत खराब को बहानो कर लओ ओर खटिया पे पड़ गई। बा न कोई से बोल रई न चाल रई, न हल रई न डुल रई, खाबो-पीबो भी बन्द कर दओ। गाँओं भर में बाकी बीमारी को हल्ला मच गओ। धीरे-धीरे करके गाँओं के सब लोग जुड़ गए। एक दादा ने पूछी, "बहु केंसी तबियत हे?" बहु मरी-सी आबाज में बोली, "मेरी तबियत भोतई खराब हे, मेरे प्राण निकर जाहें।" अब पूरे गाँओं बारे परेसान, खूब दबा-दारू करबा रए हें पर बहु ठीकई नईं भई। इत्ते में गाँओं को सबसे बूढ़ो आदमी आओ। बाने कई, "बहु जा बताओ ऐसी तबियत पहले कभऊँ खराब भई थी।" बहु ने कई, "दादा हमरी तबियत तो पहली बार खराब भई हे। पर हमरे गाँओं में एक बहु की तबियत बिलकुल हमरे जेंसी बिगड़ी थी। बा बहु की सास के बालों को मुण्डन करबाके ओर उन बालों हें पुटरिया में रखके बिनने बहु के ऊपर से पाँच बार उतारके नदी में सिराए,

तब जाके बा ठीक भई थी।" बूढ़े दादा बड़े ध्यान से सुन रए थे। बिनने कई, "बहु की जान बच जाए जोई करो।" बिचारी माताराम चुपचाप सब तमासो देख रई थी।

अब जल्दी से नाई हे बुलबाओ ओर माताराम को मुण्डन करबाओ। बालों हे पुटरिया में रखके बहु के ऊपर से पाँच बार उतारके नदिया में सिरा दए। बहु तो नाटक करई रई थी बा तुरतई बिलकुल अच्छी हो गई।

रात के समय मोड़ा सहर से दुकान को सामान लेके लोटो, तो बाहे सब बात पता चली। बो समझ गओ भोत दिक्कत हो गई हे। मगर मोड़ा बड़ो समझदार थो, बो कछु नईं बोलो। बाने सोची जब बखत आहे तब देख हूँ। जाको बदला जरूर लेहूँ।

जब मोड़ा दुकान पे जाए तो बहु चकिया लेके बेठे ओर कछु भी पीसबे रख ले। चकिया चलात जाए ओर गात जाए, "मेंने ऐंसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मेंने ऐंसी टेक निभाई...।" जो गीत सुनके माताराम बड़ी दुखी होए, भोत परेसान रहे। फिर भी जा बात माताराम ने अपने मोड़ा हे नईं बताई।

एक दिन का भओ की, मोड़ा दुकान बन्द करके दुफेर मेंई घर आ गओ। जेंसई घर के भीतर घुसो बाने देखो, बहु चकिया चला रई हे ओर बोई गीत गा रई हे, "मेंने ऐंसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मेंने ऐंसी टेक निभाई...।" मोड़ा हे भोत गुस्सा आई। पर बाने सोची में ईंट को जबाब पथ्थर से देहूँ।

अब मोड़ा सीधो अपनी सुसरार पोंहचो। पोंहचतेई से जोर-जोर से रोन लगो। बाके सुसर-सास, सारे सब घबरा गए की लालाजी हे का हो गओ? का घर में कछु बुरो हो गओ? सुसर ने पूछी, "लालाजी बताओ तो का बात हे, का तकलीफ हे?" लालाजी रोत-रोत बोले, "तुमरी मोड़ी की तबियत कछु दिना से भोतई खराब हे। हमने बाको भोत इलाज कराओ मनो बाहे कछु आराम नई पड़ रओ। एक गुनिया ने बताओ हे बाहे भोतई खतरनाक प्रेत बाधा लगी हे। अगर बा बाधा दूर नईं भई तो तुमरी मोड़ी खतम हो जाहे। बा खतम भई तो हमरी माताराम खतम हो जाहें ओर बिनके बाद में खतम हो जेहूँ! बाके बाद तुमरे घर भी ऐंसई हुए। एक-एक करके सब मर जेहें। सब सत्यानास हो जेहे।"

सबरे बड़े परेसान अब का करें? सुसर ने पूछी, "लालाजी गुनिया ने प्रेत बाधा दूर करबे काजे कछु उपाओ बताओ हे की नई?" लालाजी बोले, "जा बाधा ने गुनिया से कई हे का मोड़ी हे तबई छोड़हूँ, जब जाके सबरे मायके बारे मोड़ा-मोड़ी से लेके डुकरा-डुकरिया तक, अपनो मुण्डन करबाके सबरे बाल एक पुटरिया में रखके

मोहे दे देहें।" सबने सूद सला करी, सोची मुण्डन करबाबे से जा बला टर रई हे तो बा में कछु हरज नई।

तुरतई गाँओं के सबरे नाइयों हे बुलबाओ। परबार के सबरे लोग आँगन में लाइन लगाके बेठ गए, बड़ो परबार थो पचास-साठ लोगों को। नाइयों ने सबको झलदी-झलदी मुण्डन करो। मुण्डन के बाल एक पुटरिया में बाँधके लालाजी ने कई, "में झलदी-झलदी घोड़ा गाड़ी से गाँओं निकर रओ हूँ। आप लोग अपने-अपने साधनों से गाँओं पोंहचियो।" मोड़ी सबकी लाड़ली थी जाके मारे सबरे मायके बारे अपने-अपने साधनों से बाहे देखबे चल दए।

उते मोड़ी चकिया चलात-चलात डुकरिया हे चिड़ाबे लगी थी, "मेंने ऐंसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मेंने ऐंसी टेक निभाई...।" मोड़ा जब घर में घुसो तो बई के पीछे-पीछे मोड़ी के मायके बारे भी आ गए। मोड़ा ने घरबारी से आँगन की तरफ इसारा करके कई, "देख उते।" ओर बो गान लगो, "मेंने ऐंसी टेक निभाई मुण्डों की लेन लगाई, मेंने ऐंसी टेक निभाई...।" मोड़ी ने आँगन के दरबज्जे पे देखो तो धक्क से रह गई। सबरे मायके बारे खड़े हें – सबके सब मुण्डे! बा समझ गई – जो जेंसो करहे बो बेंसो भरहे।

# 4
# लकटकिया

बुढ़िया को एक मोड़ा हतो बाको नाम थो "लकटकिया"। बो गाँओं पटेल के ढोर चरात थो। एक बार बो ढोर चरा रओ थो, भईं से कछु लोग नरबदा नहान जा रए थे। लकटकिया ने पूछी, "काय भइयाहुन तुम काँ जा रए हो ?" बिनने कई, "हम नरबदा नहान जा रए हें।" लकटकिया ने कई, "मोहे भी ले चलो।" सबने कई, "चले चल।" बो सब ढोरों हे लेके उनके संगे चल दओ।

नरबदाजी पोंहोचके सब जनों ने इसनान करो। इसनान के बाद पण्डज्जी ने सबके टीका लगाओ, सबने बिन्हें दक्षणा दई। अब लकटकिया की जेब तो खाली हती। बो बड़े सोच में पड़ गओ पण्डज्जी हे का दऊँ। इत्ते में पण्डज्जी जी ने बाहे टीका लगाओ। बाने ढोरों में से एक बछड़ा लाके दान कर दओ। पण्डज्जी खुसी से फूले नई समाए ओर बाकी बड़ाई करन लगे। इत्ते में दूसरे पण्डत आके सबके टीका लगान लगे। लकटकिया ने आओ देखो न ताओ ओर सबे एक-एक ढोर दान करन लगो। सबई पण्डत बाकी जय-जयकार करन लगे। बोले, "हमने इत्तो बड़ो दानी पहले कबहूँ नईं देखो।" लकटकिया के संगबारों ने कई, "तू बड़ो मूरख हे, ऐंसे दान कर रओ हे जेंसे तू कहीं को पटेल हे ?" लकटकिया हे पटेल की याद आ गई, बाने सोची अब में मरो। बिना ढोरों के घर जेहूँ तो पटेल तो मेरी जान ले लेहे। बाने सोची, अब में घरई नई जेहूँ। जो तो बड़ो खूँतो हो गओ हे। बो भईं रेता में मूढ़ पकड़के बेठ गओ। दिन डूबे सब लोग अपने-अपने घर चले गए। रात हो गई, लकटकिया हे भूँक लग आई। जब भूँक सहन नईं भई तो बाने अपने घर की गेल पकड़ी।

उते गाँओं में पटेल अगल परेसान हो रओ थो कि अभे तक ढोर बापस नईं आए। लकटकिया की बूढ़ी माँ ने तो चिन्ता-फिकर में रोटी भी नईं खाई। बा सोचे, "इत्ती देर तो कभ्भऊँ नईं भई, राम जाने का हो गओ ?" इत्ते में हाँपत-हाँपत भूँको-प्यासो लकटकिया अपने घर पोंहचो। बुढ़िया ने पूछी, "इत्ती देर केंसे भई ओर ढोर किते हें ?" लकटकिया ने बुढ़िया हे पूरी बात बता दई। बुढ़िया के काटो तो खून नईं, भुनसारे पटेल न जाने का करहें। बाने सोची रातों-रात गाँओं छोड़बे मेई भलो हे। बाने लकटकिया हे झल्दी-झल्दी रोटी खिलाई ओर अपने सामान की

पुटरिया बाँध लई। लकटकिया ने अपनी गुलेल साथ में रख लई। दोई घर से निकर पड़े। रस्ते में घनो जंगल थो। लकटकिया रस्ते में से कंकड़-पथ्थर बीनके अपनी गुलेल से इते-उते मारत चल रओ थो, कायसे कोई जंगली जानबर जोरे न आए।

चलत-चलत भुनसारे दोई एक गाँओं में पोंहचे। लकटकिया के हाथ में एक पथ्थर बच गओ थो। बुढ़िया ने लकटकिया से कई, "जा बेटा कछु खाबे काजे लिआ।" बुढ़िया भईं बेठ गई। लकटकिया एक दुकान पे गओ ओर बाने गुड़-फुटाने मंगे। दुकानदार ने जाके हाथ में पथ्थर देखो। बो हीरा हतो। दुकानदार ने बाहे पकड़ो ओर सीधो राजा के जोरे ले गओ। राजा ने बासे पूछी, "जो हीरा काँ से लाओ हे?" लकटकिया ने कई, "रात में जंगल में, ऐंसे भोत से पथ्थर इते-उते फेंके हें।" राजा ने कई, "तू ऐंसई एक ओर पथ्थर लेके आ, नईं तो तोहे फाँसी चढ़बा देहों।"

बो डरके मारे बापस जंगल में जाके बेंसई पथ्थर ढूँढन लगो, पर बाहे फिर बे पथ्थर नईं मिले। रात हो गई, जंगली जानबर बोलन लगे तो डरके मारे बो एक पेड़ पे चढ़ गओ। कछु देर बाद भाँ एक परी आई। बा पेड़ के नीचे बेठके बाँसुरी बजान लगी। लकटकिया बाहे देखके पेड़ के नीचे उतर आओ, परी ने लकटकिया हे देखो। परी हे बरदान हतो, जो कोई आदमी बाहे देख लेहे परी हे बासेई ब्याओ करनो पड़हे। परी ने लकटकिया हे सारी बात बता दई।

लकटकिया बाहे घर लेके आ गओ। लकटकिया ने परी हे अपनो हाल बताओ। परी ने कई, "इत्ती सी बात!" बाने अपने जादू से हीरा ला दओ। भुनसारे लकटकिया हीरा लेके राजा के जोरे पोंहचो। राजा भोत खुस भओ, बाने लकटकिया हे इनाम देके बिदा करो। बाद में राजा ने सोची हो सकत हे जा पे अबे ओर भी हीरा हों। जा से राजा ने अपने चतुर चालाक नाई हे जासूसी करबे काजे लकटकिया के घर भेजो। दूसरे दिना नाई ने आके राजा के कान में कई, "महाराज लकटकिया की ओरत तो परी जेंसी खपसूरत हे! तुम बाहे रख लेनो, में तुमरी एक रानी हे रख लेहूँ।" राजा नाई की बात मान गओ।

अब नाई ने लकटकिया हे मारबे की सोची। नाई ने राजा से लकटकिया हे आदेस दिलबा दओ कि तू सुरग जाके हमरे आजे-पराजे की खबर लेके आ। लकटकिया ने राजा से पूछी, "राजा साब में सुरग केंसे जाऊँगो?" राजा साब बोले, "हमने एक कुआ खुदबाओ हे। बा में तोहे बिठाके, लकड़ी डारके आगी लगा देहें। तू धुँआ के संगे सीधो सुरग पोहोंच हे।" लकटकिया ने जा बात बाकी ओरत हे बताई। घरबारी तो परी थी, बाने लकटकिया हे कुआ में से जादू के जोर से अन्दरई-अन्दर घर ले आई।

नाई हे जा बात पता चली तो बाने तुरतई जाके राजासाब हे खबर करी। राजा ने अपने सेनिक भेजके लकटकिया हे बुलबाओ ओर बासे पूछी, "सुरग में हमरे आजे-पराजे केंसे हें?" लकटकिया ने कई, "सबरे मजे से हें महाराज, पर सबके जटा-जूट खूब बढ़ रए हें काय से उते भोत मेंघाई हे। भाँ को नाई एक दाढ़ी बनाबे के सो रुपैया ओर कटिंग के पाँच सो रुपैया लेत हे।" नाई ने सोची इत्ती मेंघी दाढ़ी-कटिंग? बाने

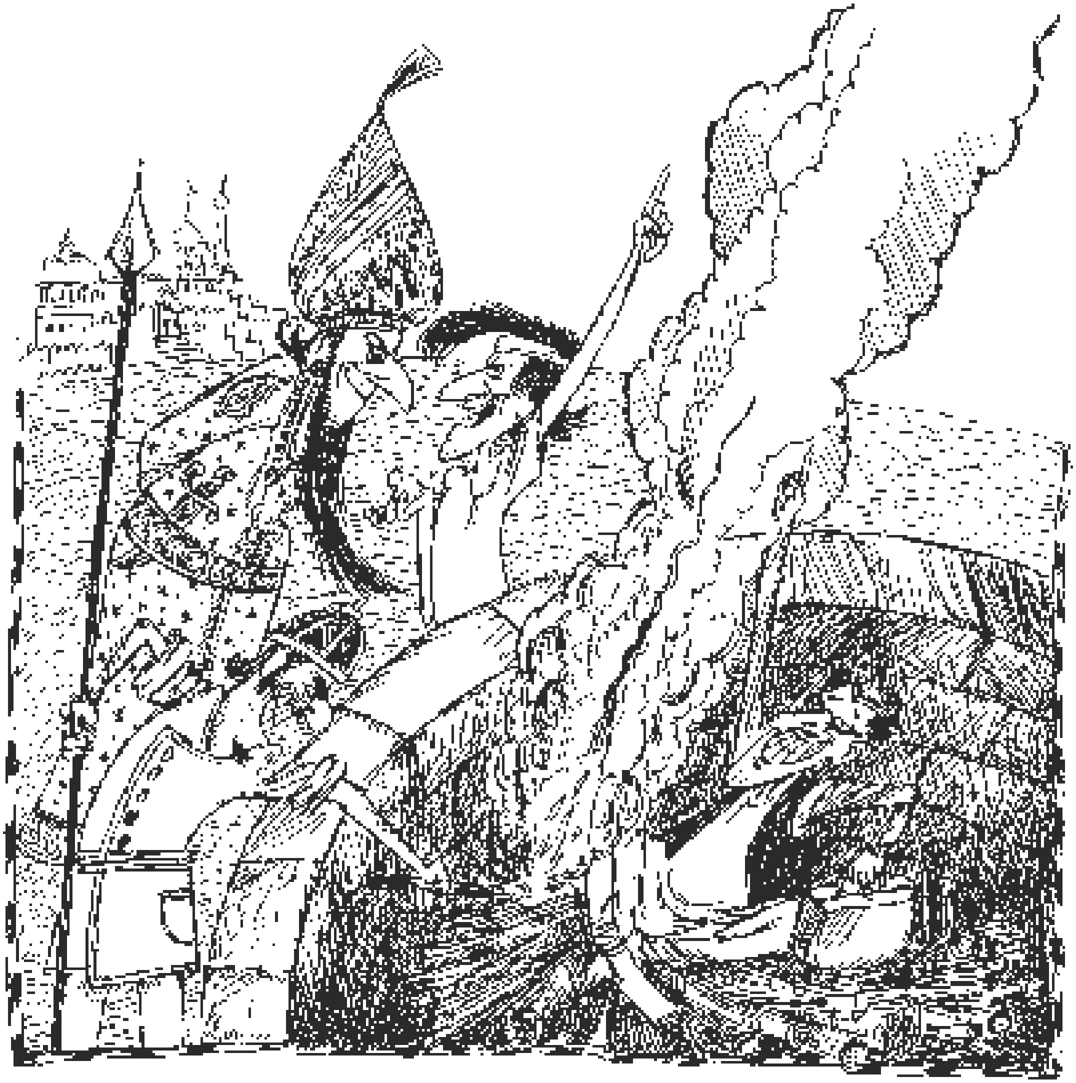

राजा साब से कई, “में सुरग जाऊँगो ओर सबकी दाढ़ी-कटिंग बनाके लोट आऊँगो।” राजा साब मान गए, बिनने नाई हे कुआ में डरबाके आग लगबा दई।

जब भोत दिना हो गए तो राजा साब ने लकटकिया से पूछी, “नाई अबे तक सुरग से नई आओ?” लकटकिया बोलो, “लगत हे नाई लालच में पड़ गओ हे, अब बो नईं आए। बेंसे भी सुरग जाके कोन बापस आनो चाहेगो।” राजा समझ गओ जो बड़ो चतुर-चालाक हे। बाने लकटकिया हे अपनो मंत्री बना लओ।

5

# लल्लू चोर

एक हतो लल्लू, अकल से थो बो बुद्धू। बो कछु काम-धाम करत नईं थो, दिन भर आबारा जेंसो घूमत रहत थो। एक बार घूमत-घूमत पोंहच गओ जंगल में ओर उते आम के पेड़ पे चढ़के आम तोड़के खान लगो। इत्ते में बाने देखो चार जने आके पेड़ के नीचे बेठ गए ओर बतियान लगे। लल्लू चिमाई लगाके बिनकी बात सुनन लगो। बे चारई चोर हते ओर रात में कोई के घर चोरी करबे की बतिया रए थे। इत्ते में लल्लू की जेब से एक बड़ो-सो आम एक चोर के मूढ़ पे टपक गओ। चोर उतई बेहोंस हो गओ। तीनई चोरों ने घबराके ऊपर देखो, तो पेड़ पे बेठो लल्लू दिखाई दओ। लल्लू ने बिनसे कई, "अभे तो मेंने एकई हे मारो हे। तुम लोग चोरी करत हो जा बात राजा साब से केहूँ।" चोर डर गए ओर लल्लू के हाथ-पाँओ जोड़न लगे। बे बोले, "भइया तू हमसे चाहे जो कछु ले ले, मनो राजा साहब से जा बात मत कइए। बे हमें फाँसी पे लटकबा देहें।" लल्लू ने कई, "मेरी अम्मा मोसे गुस्सा रहत हे की में कछु करत-धरत नईं हूँ। ऐंसो करो मोहे भी तुमरे संगे कर लो।" चोर मान गए।

आधी रात में बे लोग एक गाँओं में चोरी करबे गए। जे घर में चोरी करनो थो बाके पास पोंहचे तो लल्लू चोरों से बोलो, "भइया मेंने पहले कभऊँ तो चोरी करी नईं, जा बताओ जा घर में से का चुरानो हे?" चोरों को सरदार बोलो, "भारी-भारी सामान चुरानों।" बाको मतलब थो – जेबरों में से मेंघे ओर भारी-भारी गहने चुरानों।" बे घुस गए, घर में चोरी करबे। चोर मेंघो सामान ढूँढ-ढूँढके गठरियों में बाँधन लगे। लल्लू हे घर के एक कोने में चकिया को एक पाट मिल गओ, बाने उठाके देखो बो भोत भारी थो। लल्लू खुस हो गओ, बाने सोची भोतई अच्छो सामान मिलो हे। बो चकिया के पाट हे कन्धा पे धरके गाँओं के बाहर चबूतरा पे धर आओ। ओर बापस आके चोरों से खुसी-खुसी बोलो, "मेंने बहुतई भारी सामान चुराओ हे। झल्दी चलो तुम लोगों हे दिखा दऊँ।" चोरों ने समझी लल्लू के हाथ तिजोरी लग गई हे। बिनने सारी गठरिएँ उतई पटकीं ओर लल्लू के साथ भगत-भगत चबूतरे पे पोंहचे। उते बिनने तिजोरी की जगह चकिया को पाट देखो तो बिन्हें भोतई गुस्सा आओ। बे मिलके लल्लू हे मारन लगे। बोले, "अच्छो मूरख हे तू?" लल्लू चिल्ला-चिल्लाके कहन लगो, "मूरख हुओ तुम लोग, तुमने जेंसी कई बेंसई मेंने भारी सामान उठाओ हे। ओर बोलन लगो, "में तुमरी सिकायत राजा साब से कर देहूँ।" चोर फिर डर गए, हाथ जोड़के बोले, "तेरे हल्ला में गाँओं बारे जग जेहें, अब चुपचाप इते से भग लेमें। बइमें तेरी ओर हमरी भलाई हे।"

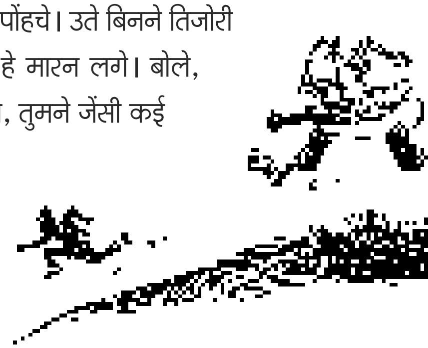

कछु दिना बाद चोर एक घर में चोरी करबे पोंहचे। घर में घुसबे के पहले लल्लू ने बिनसे कई, "अभई बता दो कोन सो सामान चोरी करनो हे?" चोरों को सरदार बोलो, "कोई भी सामान चोरी करबे के पहले ठीक से ठोंक-बजाके देख लेनो।" बाको मतलब थो सामान हे देख-परखके चोरी करनो। बे घुस गए घर में चोरी करबे। चोरों हे तिजोरी मिल गई, बे बाहे खोलई रए थे। इत्ते में लल्लू के हाथ में दिबाल पे टँगी कोई चीज आ गई। बाने सोची जाहे चुराबे के पहले ठोंक बजाके देख लऊँ। बा थी ढोलकी। जेंसई लल्लू ठोंकन लगो, बाको ऐरो सुनके घर बारे जग गए। सब चिल्लान लगे, "पकड़ो-पकड़ो भड़ियों हे पकड़ो!"

सबरे चोर अपनी जान बचाके आगुड़-बागुड़ कूद फाँदकें भागे। अपनी मिलबे की जगह पोंहचे तो कोई के उन्नहा फट गए थे, कोई खबना में खब गओ थो, कोई के पाँओं में काँटे गड़ गए थे। सबरे मिलके लल्लू हे ताओ बतान लगे। लल्लू ने कई, "एक तो में सरदार को बताओ काम कर रओ हूँ ओर ऊपर से तुम लोग मोहे आँख बता रए हो ? में अभई जाके राजा से सिकायत करत हूँ।" चोरों ने कान पकड़े, बोले, "माफ करो मूरख राज।" बिनने आपस में सूद सला करके कई, "लल्लू भाई अब हम जिते भी चोरी करबे जाहें, उते तुम्हें कछु भी चोरी करबे की जरूरत नईहाँ। बस तुम साथ रहियो।"

अबकी बेरा रात में, बे एक डुकरिया के घर चोरी करबे घुसे। चोर मालमत्ता ढूँढन लगे। लल्लू ने देखो चूल्हे पे खीर चुड़ रई हे ओर उतई दिबाल से टिकके डुकरिया सो रई हे। असल में खीर बनात-बनात डुकरिया ऊँघन लगी थी। लल्लू थरिया में खीर लेके खान लगो, बीच बीच में डुकरिया हे भी देखत जाए, काय से डुकरिया जग न जाए। इत्ते में डुकरिया हे जम्भाई आई। बा नींद मेंई एक हाथ मों के पास ले गई। लल्लू हे लगो डुकरिया इसारे से कह रई हे, "मेरे मों में खीर डार दे।" लल्लू ने आओ देखो न ताओ एक करेछली गरम खीर डुकरिया के मों में डार दई। डुकरिया को मों बर गओ। बा जोर-जोर से चिल्लान लगी। बाको हल्ला सुनके गाँओं बारे आ गए। चारई चोर घर के चार कोनों में लुक गए। लल्लू ऊपर पटमा पे लुक गओ। गाँओं बारों ने डुकरिया से पूछी, "तेरे मों में गरम खीर कोन ने डार दई ?" डुकरिया बोली, "मोहे कछु नई मालुम भइया! ऊपर बारो जाने... ? मेरो तो मों बर गओ, आग लगे ऊपर बारे में।"

लल्लू ने सोची डुकरिया मेरिई-मेरिई कह रई हे। बासे सहन नईं भई। बो बोल उठो, "जब से मेरिई-मेरिई कह रई हे डुकरिया! जे चारई कोने में लुके हें इनकी कछु नईं कह रई।" गाँओं बारों ने पटमा पे से लल्लू हे ओर चारई कोनों में से चारई चोरों हे पकड़ लए ओर खूब पिटाई लगाई।

# 6
# जादुई संख

एक गाँओं में एक साधु रहत थे। बिनकी कुटिया गाँओं से बाहर नदी के किनारे थी। एक आदमी बिनको चेला थो। बो रोज साधु की सेबा करबे जात थो। बो दिन ऊगे चलो जाए। कुटिया में बुहारी लगाए, पानी भर आए। साधु के लाने रोटी बना दे। ऐंसो करत-करत भोत समय बीत गओ। साधु बूढ़ो हो गओ ओर बीमार रहन लगो। एक दिना साधु हे लगो बाको आखिरी समय आ गओ हे। बाने अपने चेला हे बुलाके कई, "बेटा तूने मेरी भोत सेबा करी हे, कछु दुख नईं होन दए। में तोहे कछु देनो चाहत हूँ।" साधु ने अपने सिरहाने के नीचे से एक संख निकारके चेला हे दओ। बोलो, "जो जादुई संख हे, तोहे मुसीबत में भोत काम आहे। जब भी तू संख से कछु माँगहे बो तोहे देहे। हाँ एक बात जरूर हुए। तू जो भी माँगहे बासे दूनो तेरे पड़ोसी हे सुइ मिल जेहे।" साधु ने चेला हे संख को उपयोग करबे को बिधि-बिधान बताओ। बोलो, "आधी रात में घर के बाहर आँगन में निकरके संख फूँकबे से तेरी इच्छा पूरी हो जेहे। कभऊँ भी दूसरे को बुरो करबे की मत सोचिए, नईं तो तेरो अनष्ट हो जेहे।" थोड़ी देर बाद साधु मर गओ। चेला ने गाँओं बारों हे बुलाके बाको किरिया-करम कर दओ।

रात में चेला लुकाके संख अपने साथ घर ले आओ ओर बाहे म्यार पे रख दओ। जा बात बाने अपनी घरबारी हे भी नईं बताई। बाके मन में सोचा-बिचारी चलन लगी, संख से का माँगू ? धन-दोलत, हाथी-घोड़ा, महल-अटारी। पर जा बिचारके की, में जो भी माँगहूँ बासे दूनो पड़ोसी हे मुफत में मिल जेहे, बो चिमा जाए। ऐंसो करत-करत भोत दिना हो गए।

एक दिन बाको अपने गोईं के साथ द्वारिकापुरी तीरथ जाबे को बिचार बन गओ। एकाएक बिचार बनो थो जाके मारे बो घर में खाबे-पीबे के सामान की जुगाड़ नईं कर पाओ। जाबे की बेरा तुरतई बाहे जादुई संख को ध्यान आओ। बाने सोची बन गओ काम। घरबारी हे संख के बारे में बता देहूँ बा अपने खाबे-पीबे को इन्तजाम कर लेहे। बाने पत्नी हे जादुई संख के बारे में सब कछु समझा दओ। बोलो, "सिरफ खाबे-पीबे को सामान माँगियो, मेंघो सामान मत माँगियो। काय से हमसे जादा फायदा हमरे पड़ोसी को हो जेहे।" बो बोलो, "अच्छो रोबो हे, मोहे इत्ते दिनों की सेबा-टहल के बाद संख मिलो हे, ओर फायदा हुहे पड़ोसी को, बो भी दूनो। में बाको फायदा नईं होन दऊँ, जई सोच के मेंने अबे तक संख नईं बजाओ।"

चेला ओर बाको गोईं निकर गए तीरथ यात्रा पे। इते चेला की घरबारी हे चेन नईं पड़े। बा सोचे कब आधी रात

होय ओर में संख को जादू देखूँ। आधी रात तक बा भूँकी बेठी रई। आधी रात होतई आँगन में निकरके बाने जा सोचके संख फूँको की सोने की थारी में खीर पुड़ी, पकबान खाबे मिल जाएँ। तुरतई सोने की थारी प्रकट भई। बाने जी भरके खाना खाओ। खाना खाबे के बाद बाने सोची, मेरे गरे में हीरों को हार आ जाए। संख बजातेई बाकी इच्छा पूरी हो गई। हीरों की चिलक में बाने अपने टूटे-फूटे घर हे देखके सोची, जाकी जिग्गहा महल बन जातो तो मजई आ जातो। संख फूँकतेई से महल बन गओ। साथ मेंई पड़ोसी के घर की जिग्गहा बेंसेई दो महल बन गए। चेला की घरबारी ने अपने महल के छज्जा से पड़ोसन हे देखो। बाके गरे में हीरों के दो-दो हार थे। बाके मोड़ा-मोड़ी सोने की थरियों में खाना खा रए थे। जा देखके बा जलभुँज गई। रात भर बाहे नींद नईं आई। सोचन लगी तीरथ यात्रा से बाके घरबारे लोट हें तो बे कछु कर हें। बाने संख हे लुकाके रख दओ।

महीना भर बाद बाको घरबारो तीरथ यात्रा से लोटो, तो बाने बाहे सब बातें बताई। घरबारो घरबारी से जादा सुआरथी निकरो। बो पहले तो घरबारी पे खूब चिल्लाओ, "मेंने पहलेई कई थी संख से मेंघो सामान मत माँगियो, तुमने पड़ोसी के दो-दो महल बनबा दए ?" अब में कछु जुगाड़ लगात हूँ ताकी पड़ोसी को भलो ने होय।

बो लग गओ सोचा-बिचारी में। आधी रात को बाने जा सोचके संख फूँक दओ की मेरी एक आँख फूट जाए, बासे पड़ोसी की दोई आँखें फूट जेहें। बाकी एक आँख फूट गई पर भाग से, बा दिना पड़ोसी अपनी सुसरार गओ थो। जा से बाकी आँखें फूटबे से बच गईं। दूसरी बार बाने अपनी एक टाँग टूट जाए सोचके संख बजा दओ। पड़ोसी तो बच गओ पर बाकी एक टाँग टूट गई। टाँग टूटी तो दरद के मारे बो चीखन-चिल्लान लगो। फिर भी बाने जा सोचके तीसरी बार संख फूँक दओ की मेरे महल के सामने एक कुआ खुद जाए, बाके पड़ोसी के महलों के सामने दो-दो कुआ खुद गए। घरबारे ने सोची में दरद के मारे इत्तो चीख-चिल्ला रओ हूँ पर पड़ोसी को ऐरो नईं आ रओ का बात हे ? दोइयों ने सोची महल के बाहर निकरके देखिएँ की पड़ोसी को का भओ ! उलात में बे भूल गए की उनके महल के सामने भी कुआ खुदो हे। बे दोई कुआ में गिर गए ओर मर गए।

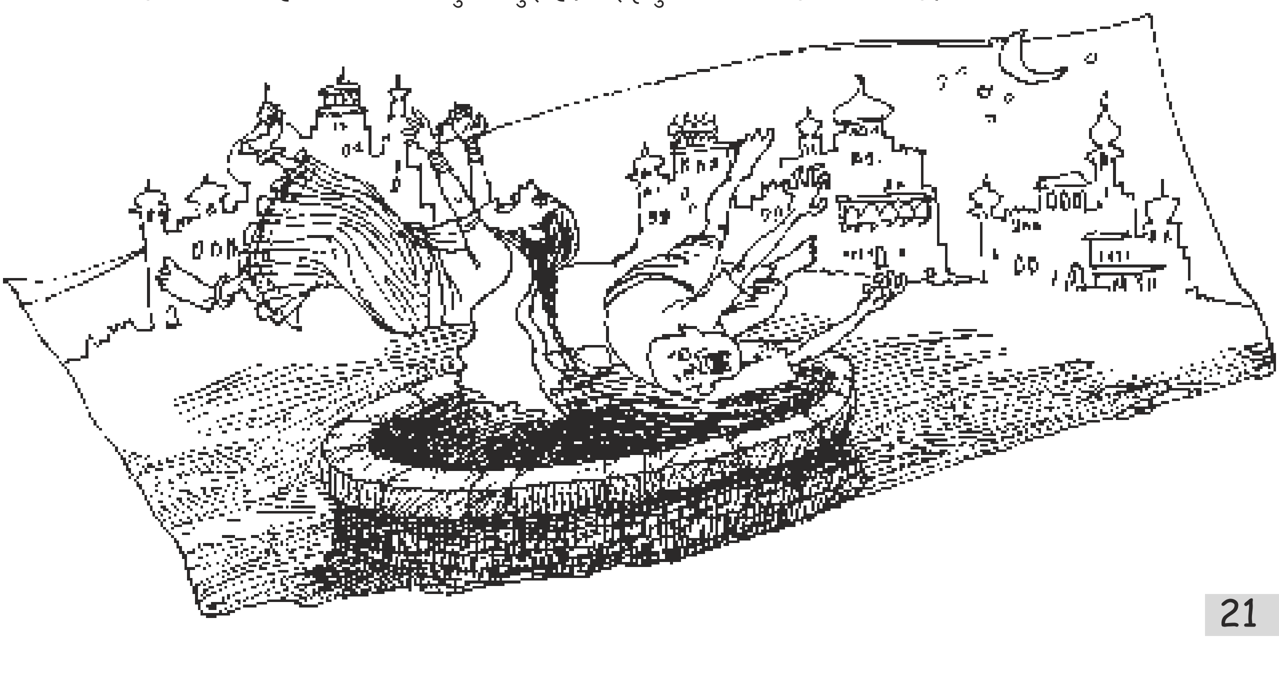

7

# पत्ता भर भत्ता

एक गाँओं में दो भइया रहत थे। बड़े को नाम कुन्दन, छोटे को नाम नन्दन थो। बे भोतई गरीब हते। बे गाँओं में मेहनत मजूरी करके अपनो पेट भरत थे। एक दिना कुन्दन ने नन्दन से कई, "भइया जा गाँओं में, दिनों-दिन हमरी भूँको मरबे की नोबत आ रई हे। में कल्लई दूसरे गाँओं काम ढूँढबे जाहूँ।"

दूसरे दिना कुन्दन जोरे के गाँओं में जाके जोर-जोर से चिल्लाके कहन लगो, "मोहे कोई काम से लगा लो... भइया कोई काम से लगा लो...।" बाको ऐरो सुनके गाँओं पटेल ने बाहे बुला लओ। पटेल ने बासे पूछी, "का नाम हे तेरो, काँ से आ रओ हे ओर का काम करहे ?" कुन्दन ने अपनो नाम-पतो सब बता दओ ओर कई, "जो कछु भी काम बताहो बो में करहूँ।" अब पटेल ने कई, "साल भर काम करबे के बाद, पाँच सौ रुपैया मजूरी के देहूँ ओर हर दिन खाबे के लाने पत्ता भर भात मिलेगो। पर एक सरत हे, अगर तूने अपने मन से साल भर के भीतर काम छोड़ो, तो तेरे नाक-कान काट लेहूँ ओर मजूरी भी न देहूँ। ओर अदि में तोहे झाँ से भगाऊँ, तो तू मेरे नाक-कान काट लइए ओर बदले में मोसे हजार रुपैया लइए।" कुन्दन ने लालच के मारे बिना सोचे समझे पटेल की सरत मान लई।

अब बो दिन भर काम करे ओर दिन डूबे पटेल के बगीचा में से कभी आम को पत्ता तो कभी बिही को पत्ता तोड़ के ले जाए। पटेल के घर से बाहे पत्ता भरके भात मिल जाए। छोटे-छोटे पत्ता पे जरा सो भात बने, जाके मारे बो भूँको मरन लगो। जेंसे-तेंसे कछु दिन बाने काम करो। जब भूँक सहन नहीं भई तो बाने पटेल से कई, "पटेल साब में जा रओ हूँ।" पटेल ने बाहे सरत याद दिलाई। कुन्दन बोलो, "पटेल साब पेट कटबे से अच्छो हे अपने नाक-कान कटा लऊँ।" पटेल ने बाके नाक-कान काट लए।

कुन्दन रोत-रोत बापस अपने घर पोंहचो। नन्दन ने पूछी, "काय भइया तोरे नाक-कान कोन ने काट लए ?" कुन्दन ने पूरी कहानी सुनाई। नन्दन हे आओ गुस्सा, बाने कई, "भइया जेने तेरे नाक-कान काटे हें, में बाके सुइ नाक-कान काटके लाहूँ।"

दूसरे दिना नन्दन बई गाँओं पोहोंचके, गली-गली चिल्लान लगो, "काम लगा लो... कोई मोहे काम लगा लो...।" पटेल ने आबाज सुनी तो खुस हो गओ की एक ओर मुरगा फँसो। पटेल ने बाहे बुलाओ ओर अपनी सरत बताई। नन्दन ने बाकी सब बातें तुरतई मान लईं।

दूसरे दिना पटेल के खेत में काम करबे के बाद, दिन डूबे नन्दन पटेल के घर केरा को पत्ता लेके पोहोंच गओ। पटेल हे बाहे केरा के पत्ता भर भात देनो पड़ो। नन्दन की पहचान एक बगीचा बारे से थी, बो बासे रोज एक केरा को पत्ता लिआए। पटेल से भात लेके खुद जी भर के खाए ओर बचो भात बगीचा बारे गोईं के लाने ले जाए। बो भी खाके खुस हो जाए।

एक दिना का भओ, पटेल के इते मिजबान आए। पटेल ने नन्दन हे बुलाओ ओर कई, "तू झल्दी चाय बनाके ला।" नन्दन ने कई , "केंसे बनाऊँगो ?" पटेल ने कई, "अरे मूरख! घर में आगी बारके बना लइए।"

नन्दन घर गओ ओर बाने घर में आगी लगा दई। देखत-देखत पूरो घर बर गओ। गाँओं भर में हल्ला मच

गओ की पटेल के घर में आगी लग गई हे। सबरे दोड़े। उनने आगी बुझाई। पटेल ने नन्दन हे खूब डाँटो। नन्दन ने कई, "तुमनेई तो कई थी घर में आगी बारके चाय बना लइयो।"

पटेल को घर तो बर गओ। पर पटेल नन्दन हे भगा भी नईं सके, नईं तो बो पटेल के नाक-कान काट लेहे। ऊपर से हजार रुपैया धरबा लेहे। पटेल ने सोची जो मोहे बरबाद करके छोड़ हे, जासे केसे पिण्ड छुड़ाऊँ? रात में बाने पटेलन से कई, "अपन दोई चुपचाप कछु दिना के लाने तेरे मायके चले चलत हें। तब तक जो नन्दन हेरान होके काम छोड़के भग लेहे। रस्तो लम्बो हे खाबे-पीबे, ओढ़बे-बिछाबे को सामान पेटी में रख लइयो।" जा बात नन्दन ने सुन लई। रात में बो पेटी में चुपके से घुसके बेठ गओ।

पटेल ने आधी रात में पेटी मूढ़ पे धरी ओर पटेलन हे संग लेके निकर गओ। गेल में बाने पटेलन से कई, "पेटी तो भोतई गरई लग रई हे। जामे का धरो हे?" पटेलन ने कई, "कछु नईं थोड़ो सो खाबे-पीबे को सामान हे।" नन्दन ने पेटी में बेठे-बेठे खीर-पुड़ी, साग-सब्जी सब खा लई।

पटेल पेटी धरे-धरे बिट्टया गओ तो बाने एक जिग्गहा सुस्ताबे काजे पेटी उतारी। बाहे खोली तो बामे से नन्दन निकरो। पटेल बाहे देखके मनई-मन भोत गुस्सा भओ पर बासे कछु बोलो नईं। पटेल ने पटेलन से कई, "अपन झईं रुकहें।" पटेलन ने कई, "अपन सोहें काँ?" पटेल ने कई, "जा कुआ की पाट पे सो जेहें।"

तीनई कुआ की पाट पे सो गए। नन्दन समझ गओ थो, जामे कछु पटेल को कपट हे। बाने धीरे से उठके अपनी चद्दर पटेलन हे उड़ा दई ओर बाकी चद्दर खुद ओड़के सो गओ। सकारे उठके पटेल ने नन्दन के धोके में पटेलन हे कुआ में धका दई। पटेलन बचाओ-बचाओ चिल्लाई तो पटेल घबरा गओ। नन्दन भी जग गओ। पटेल ने बासे कई, "में तुमरे हाथ पाओं जोड़त हूँ, पटेलन हे कुआ में से निकार दे ओर बाके बदले में चाहे तो तू मेरे नाक-कान काट लइए।" बो रोन-गान लगो।

नन्दन रस्सी बाँधके कुआ में कूदो ओर पटेलन हे कुआ में से निकार लाओ। पटेल पानी-पानी हो गओ। नन्दन से बोलो, "भइया तू मेरे नाक-कान काट ले, हजार रुपैया ले ले ओर मोहे माफी दे दे।" नन्दन ने कई, "पटेल साब तुमरे नाक-कान काटबे की जरूरत नईहाँ। तुमने अपनी करनी की सजा भोग लई हे। अब आगे से कोई को बुरो मत चेतियो, नईं तो तुमरो ओर भी बुरो हुए।" पटेल ने सों खा लई।

गाँओं लोटके पटेल ने नन्दन, कुन्दन दोई भाइयों हे काम पे लगा लए।

# 8
# दिल्ली की गप्प

एक थो दिल्ली को पहलबान, बाहे अपनी ताकत पे भोत गुमान थो। बाने भोतसे दंगल जीते थे। दिल्ली के असफेर कोई पहलबान नईं बचो थो, जो बासे कुस्ती लड़े। एक दिना बाहे पता चलो आगरा में एक पहलबान हे, बो भोतई बलबान हे पर बो कुस्ती लड़बे बाहर नईं जात थो। तो दिल्ली के पहलबान ने सोची में खुद जाके आगरा के पहलबान से कुस्ती लड़हूँ। बाने अपनी घरबारी से कई, में कुस्ती लड़बे परदेस जा रओ हूँ। रस्ता में खाबे के लाने एक बड़ी सी चद्दरा में सत्तू बाँधके धर दइयो।" बाकी घरबारी ने सोची परदेस की बात हे, उते खाबे को सुभीता होय न होय। जासे बाने दो चद्दरों में सत्तू की दो पुटरिएँ बाँध दईं।

पहलबान ने दोई पुटरिएँ कन्धों पे धरीं ओर चल दओ। चलत-चलत बाहे गेल में जोर की भूँक लग आई, तो बाने एक तला के किनारे जाके दोई पुटरिएँ खोल लईं ओर बो हाथ धोबे तला में गओ। इत्ते में बड़े जोर को अन्धूड़ा चलो ओर पूरो को पूरो सत्तू उड़के तला में घुर गओ। पहलबान ने सोची जो अच्छो भओ सत्तू घोरबे की मुसीबत से बचो। बाने सत्तू भरो पूरो तला पी गओ। पीबे के बाद बाहे आलस आओ। बो भईं पसरके सो गओ। बई तला को पानी जंगली हथ्थी पियत थे। हथ्थी जब पानी पीबे आए तो तला खाली डरो थो ओर उतई पहलबान सो रओ थो। प्यासे हथ्थी गुस्सा में आके पहलबान हे कुचलन लगे। पहलबान हे नींद में लगो बाके ऊपर कीड़ा चल रए हें। बो बिन्हें उठा-उठाके फेंकन लगो, बे हाथी दूसरे पहलबान के आँगन मे जाके गिरन लगे। जब पहलबान की नींद पूरी हो गई तो बो दूसरे पहलबान के घर चल दओ।

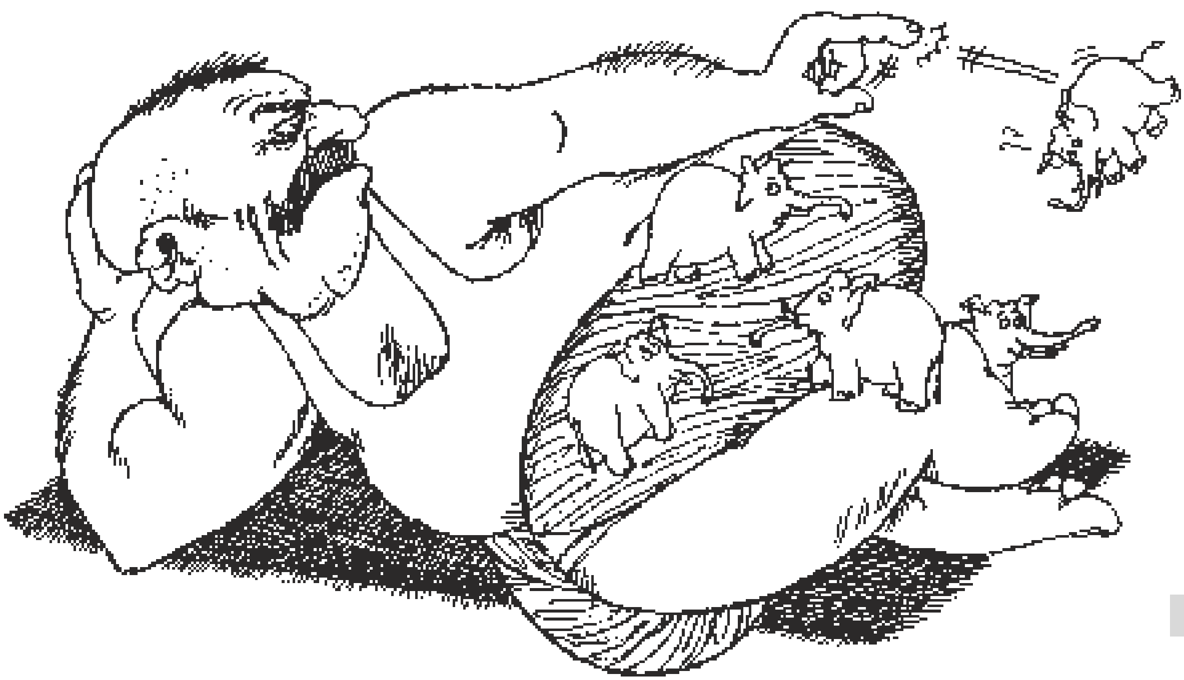

बाने पहलबान के घर पोहोंचके देखो, एक छोटी मोड़ी हथ्थियों हे झड़ा-झड़ाके आँगन के बाहर फेंक रई हे। पहलबान ने मोड़ी से पूछी, "काय मोड़ी तेरो बाप काँ हे।" मोड़ी ने कई, "बब्बा तो सो गाड़ी बाँध के, जंगल लकड़ी लाबे गओ हे।" पहलबान ने सोची जो अच्छो मोका हे, जंगल में जाकेई कुस्ती लड़ हूँ। बो चल दओ जंगल।

बई रस्ता से दूसरो पहलबान लकड़ी लदी गाड़िएँ खेंच के ला रओ थो। पहलबान एक खोह में छुप गओ ओर आखिरी गाड़ी के पहिया दोई हाथ से पकड़के थाम दए। दूसरे पहलबान से गाड़ी नईं खिची तो बाने पीछे आके देखो ओर पहलबान से कई, "काय भाई का बात हे ?" पहलबान बोलो "में तोसे कुस्ती लड़बे दिल्ली से रिंगके आ रओ हूँ।" दूसरो पहलबान भी कुस्ती लड़बे तइयार हो गओ।

पर एक बाधा आन खड़ी भई। हार-जीत को फेसला कोन करहे ? इत्ते में गेल से एक डुकरिया आत दिखी। बा अपने मोड़ा के लाने खेत में रोटी देबे जा रई थी। पहलबानों ने बासे अपनी बात कई। डुकरिया बोली, "में तुमरी कुस्ती को फेसला कर तो देती पर मोहे अभहे बड़ी उलात हे। मेरो मोड़ा खेत में भूँको हुए, बाहे रोटी देबे जा रई हूँ। जासे में तुमरी कुस्ती देखबे रुक नईं सकूँ।" जा सुनके पहलबान दुखी हो गए। डुकरिया बिन्हें दुखी देखके बोली, "ऐंसो करो तुम दोई जनें मेरी हथेली पे कुस्ती लड़त चलो। में चलत जेहूँ ओर तुमरी कुस्ती भी देखत जेहूँ।"

दोई पहलबान बाकी बात मान गए ओर डुकरिया की हथेली पे कुस्ती लड़न लगे। डुकरिया सो कदम धरके, सो कोस दूर अपने खेत में पोहोंच गई। उते बाको मोड़ा कुदाली से झल्दी-झल्दी खेत खोद रओ थो। बासे खूब धूरा उड़ रई थी। डुकरिया खेत की मेड़ पे पोंहची तो बाकी नाक में धूरा घुस गई। बाहे बड़ी जोर से छींक आई। बा इत्ती जोर से छींकी का दोई पहलबान बाकी हथेली से उड़ गए। एक गिरो दिल्ली में तो दूसरो जाके गिरो आगरा में। दोई की हड्डी-पसलिएँ टूट गईं। बिनको घमण्ड भी चूर-चूर हो गओ।

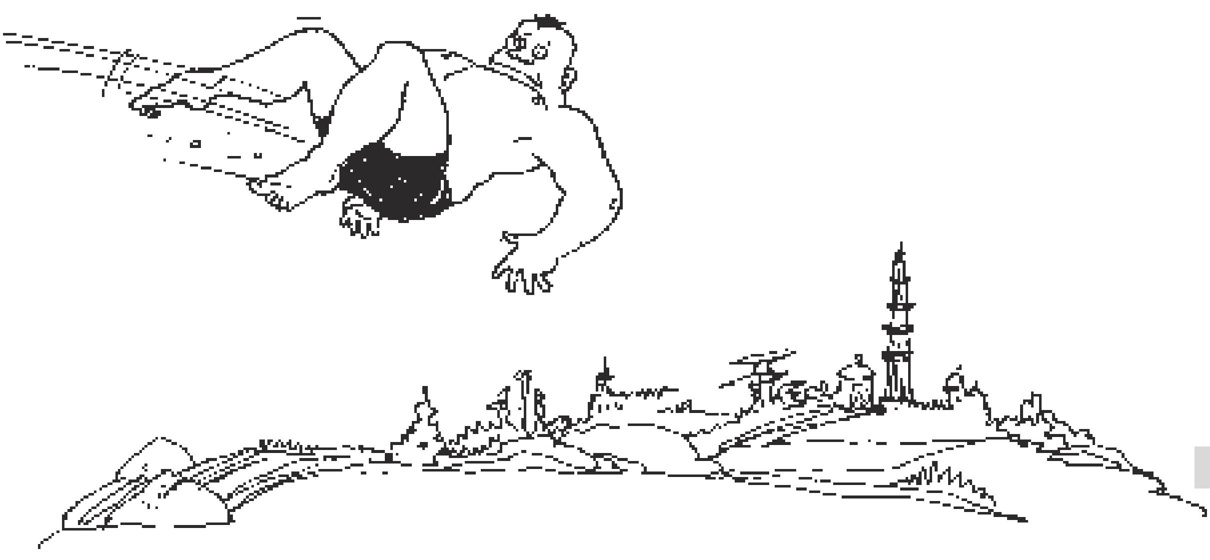

# 9
# चिड़ा-चिड़ी

इमली के पेड़ पर चिड़ा-चिड़ी रहत थे। एक दिना कहीं से, चिड़ा लाओ दाल को दाना, चिड़ी लाई चाबल को दाना। दोई ने मिलके हड़िया में खिचड़ी पकाई। चिड़ी, चिड़ा से बोली, "में नद्दी जा रई हूँ। लोट के आ जाऊँ, फिर दोई खिचड़ी खाहें।"

नद्दी में मिल गई चिड़ी की पुरानी गोईं, दोई बड़ी देर तक बतियात रईं। इते भूँको चिड़ा चिड़ी की रस्ता देख रओ थो। बड़ी देर हो गई। जब भूँक बस की नई रई तो चिड़ा ने सोची थोड़ी-सी खिचड़ी चखके देख लऊँ। खिचड़ी चखी तो बाहे भोत अच्छी लगी। बाने सबरी खिचड़ी खा लई।

थोड़ी देर बाद चिड़ी नद्दी से सपरके आ गई। बाने खाली हड़िया देखी तो भोत गुस्सा भई। बाने चिड़ा से कई, "अब में तुमरे साथ एक मिनट नईं रऊँ, में मायके जा रई हूँ।" चिड़ा बाहे मनात रहो, मनो बाने बाकी एक नईं सुनी। चिड़ी फुर्रर्र से उड़के अपने मायके चली।

जेंसई बा नद्दी के ऊपर पोंहची एक कानो कौआ काँओं-काँओं करके बोलो, "चिड़ी-चिड़ी काँ चली ?" चिड़ी बोली, "मायके।" कौआ बोलो, "काय ?" चिड़ी बोली, "चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।" कौआ बोलो, "चिड़ी रानी मायके मत जा मेरे घर रह जा।" चिड़ी बोली, "तुम काँ रहत हो, का खात हो ?" कौआ बोलो, "पेड़ पे रहत हूँ ओर नीम की निबौरी खात हूँ।" चिड़ी बोली, "मोहे नईं खानो कड़बी-कड़बी निबौरी, नईं रहनो तेरे संग।"

बा उड़ चली। उड़त-उड़त बाहे मिट्ठू मिलो। मिट्ठू बोलो, "चिड़ी-चिड़ी काँ चली ?" चिड़ी बोली, "मायके।" मिट्ठू बोलो, "काय ?" चिड़ी बोली, "चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।" मिट्ठू बोलो, "मेरे पास रह जाओ।" चिड़ी बोली, "तुम काँ रहत हो, का खात हो ?" मिट्ठू बोलो, "पेड़ की पोल में रहत हूँ ओर मिरची खात हूँ।" चिड़ी बोली, "मोहे नईं खानो चिरपरी मिरची, नईं रहनो तेरे संग। बड़ो आओ मिरची बारो।"

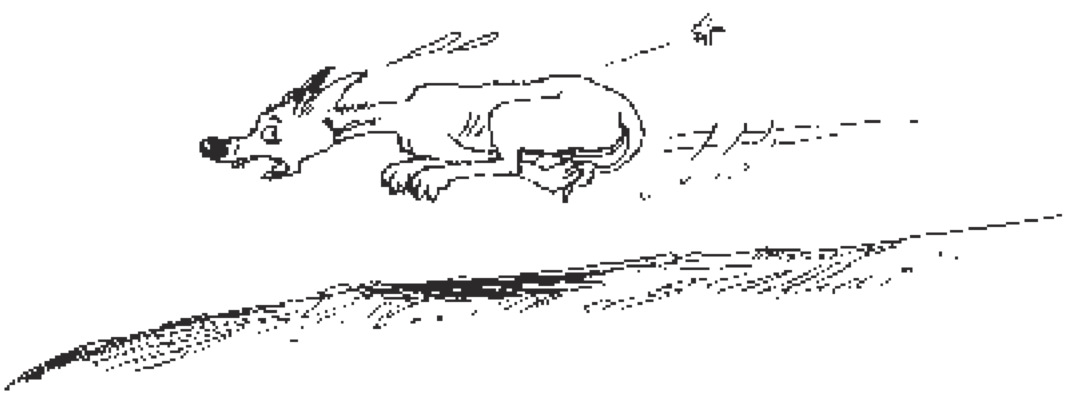

बा झल्दी-झल्दी उड़ चली। जब बा अपने गाँओं पोंहची तो गाँओं के बाहरई बूँचो कुत्ता मिल गओ। कुत्ता बोलो, चिड़ी-चिड़ी काँ चली?" चिड़ी बोली, "मायके।" कुत्ता बोलो, "काय?" चिड़ी बोली, "चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।" कुत्ता बोलो, "चिड़ी तू मेरे साथ रह जा तोहे खूब अच्छे से रखूँगो।" चिड़ी बोली, "तू रहत काँ हे, खात का हे?" कुत्ता बोलो, "पटेल के घर में रहत हूँ ओर गुड़-फुटाने खात हूँ।" गुड़-फुटाने को सुनके चिड़ी के मों में पानी आ गओ। बोली, "में तुमरे संग रह जाऊँगी पर पहले गुड़-फुटाने खिला।"

कुत्ता बाहे एक साहूकार की दुकान पे ले गओ। साहूकार कोई काम से घर के भीतर गओ थो। कुत्ता झल्दी-झल्दी गुड़-फुटाने खान लगो, चिड़ी भी बाके संग चुगन लगी।

इत्ते में साहूकार आ गओ। चिड़ी तो फुर्र से उड़ गई। बाने डण्डा से कुत्ता हे खूब मारो। कुत्ता लंगड़ात-लंगड़ात भगो तो पेड़ पे बेठी चिड़ी बासे बोली, "नीम की निबौरी खाबे बारो कौओ छोड़ो, मिरची खाबे बारो मिट्ठू छोड़ो, भले मिले तुम बूँचे कुत्ते, खूब खिलाए तुमने गुड़ फूटे।"

चिड़ी ने सोची, "सबसे अच्छो बईको चिड़ा हे जो दाल खिलात हे।"

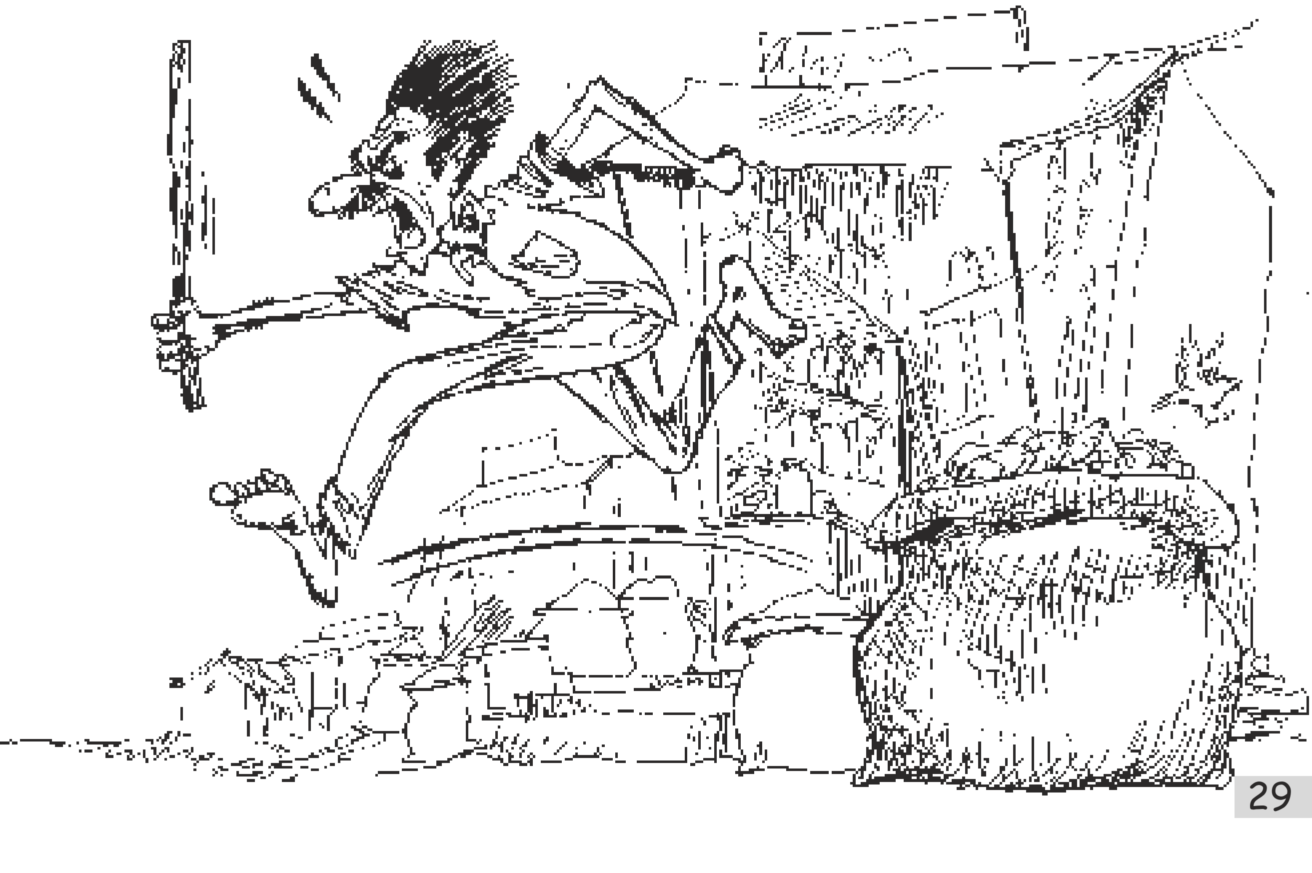

# 10
# मेहनत को फल

एक गाँओं में एक किसान रहत थो। बाके तीन मोड़ा हते, तीनई भोत अलाल थे। भओ का थो, छुटपन मेंईं मोड़ों की मेहतारी मर गई थी। जासे किसान उनसे भोत प्रेम करत थो। बाने मोड़ों हे खूब आराम दओ थो जासे मोड़ा हुन अलाल हो गए थे। बिनको छुटपन तो जेंसे-तेंसे कट गओ, पर जब बे बड़े हो गए तो किसान हे फिकर होन लगी की मेरे मरबे के बाद केंसे इनको जीबन चलहे? इनने खेती बाड़ी करबो सीखी नईंहे। जेई रंग-ढंग रहे तो जे बरबाद हो जेहें। किसान सोचन लगो मोड़ों हे केंसे सही गेल पे लाऊँ? का उपाय करूँ जासे जे मोड़ा सुधर जाएँ? बाके दिमाक में एक उपाओ आओ।

एक दिना भुनसारे किसान गेरहोंस होके धरती पे गिर गओ ओर तड़फड़ान लगो। तीनई मोड़ा घबराके दोड़े। बिनने पिताजी हे बिछोना पे लिटाओ ओर पूछी, "का हो गओ पिताजी?" पिताजी बोले, "मेरी छाती में भोत कसके दरद हो रओ हे, लगत हे अब में नईं बचूँ। बस तुमरी फिकर में मेरी जान अटकी हे। अदि तुम लोग खेती बाड़ी करके कछु कमा-धमा रए होते तो में सुख से मर तो सकत थो। न तुमने मेहनत करबो सीखी न तुम धेला कमा सको।" तीनई मोड़ा रोत-रोत बोले, "पेले तुम ठीक हो जाओ पिताजी हम मेहनत करबे तइयार हें।"

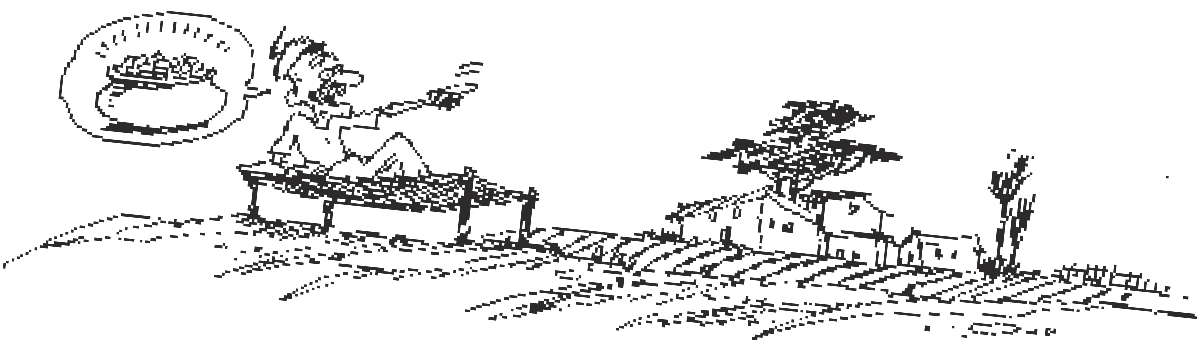

किसान बोलो, "मोहे अपने दादा की एक बात याद आ रई हे। बिनने मरत समय मेरे कान में कई थी। बिनने कई थी, "अपने जामुन बारे खेत में तीन हण्डा गड़े हें, बिनमें भोत धन-सम्पत्ति हे। तुम लोग अदि खेत खोदके बे हण्डा निकार लो, तो तुम्हें जीबन भर मेहनत मजूरी करबे की जरूरत नईं पड़हे।" मोड़ों ने पूछी। "पिताजी बे हण्डा खेत में से केंसे निकारें?" किसान बोलो, "तुम लोग कल उठ भुनसारे कुदाली लेके खेत में जइओ ओर सबरो खेत खोदियो। काहे से हण्डा काँ गड़े हें जा मोहे नईं मालुम।"

दूसरे दिना उठ भुनसारे तीनई भाई, कुदाली लेके जामुन बारे खेत में गए। दिन भर बिनने खेत खोदो, एक बित्ता धरती नईं छोड़ी। पूरो खेत खोद डारो लेकिन हण्डा नईं निकरे। दिन डूबे हारे-थके घर लोटे। बिनने पिताजी से

कई, "हमने पूरो खेत खोद डारो, लेकिन हण्डा नईं निकरे।" पिताजी बोले, "लगत हे हण्डा जमीन में गहरे गड़े हें ? ऐंसो करियो कल तुम लोग बक्खर ले जइयो, पूरो खेत बखरियो। हो सकत हे बक्खर में उरझके हण्डा जमीन के ऊपर आ जाहें।" पिताजी ने जेंसी कई थी मोड़ों ने बेंसई करो – खेत हे बखरो, पर बिन्हें हण्डा नईं मिले। निरास घर लोटे। पिताजी ने बिनसे कई, "कोई बात नईं बेटाहरों, इत्ती मेहनत करी हे तो तुम लोगों हे हण्डा जरूर मिलहें। ऐंसो करियो खेत में हल ले जइयो, हल जमीन में गहरो जाहे। बा में उरझके हण्डा ऊपर आ जाहें। अब इत्ती मेहनत करहो तो एक काम ओर करियो, बई में चना की बोनी कर दइओ।" मोड़ों ने ऐंसई करो लेकिन बिन्हें हण्डा नई मिले। बिनने पिताजी से कई। पिता ने बिनकी आस बँधाई, कई, "तुम लोग चिंता-फिकर मत करो। हो सकत हे जब फसल कट हे, तब हण्डा निकर आएँ खेत में से।"

बिनके खेत में चना की खूब फसल भई। पिताजी ने मोड़ों हे मण्डी में भेजके चना बिकबा दए। मोड़ाहुन खूब सारे रुपया-पईसा लेके मण्डी से लोटे। किसान ने बे पईसा तीन हण्डो में भर दए ओर मोड़ों से कई, "जे रहे तुमरे धन-दोलत से भरे हण्डा! का अभहे भी तुम्हें खेत में गड़े हण्डों की जरूरत लग रई हे ?" तीनई मोड़ा बोले, "हम समझ गए हें पिताजी, अदि हम खेती में मेहनत करहें तो हर साल धन-दोलत से भरे ऐंसे कई हण्डा कमा लेहें।"

# 11
# पण्डा पहलबान

गंगा किनारे गाँओं थो किसनपुर। जा गाँओं के लोग राधाकिसनजी के भोत भक्त थे। बिनने गाँओं में राधाकिसन को मन्दिर बनबाओ। मन्दिर बन गओ तो पूजा के लाने पुजारी की जरूरत पड़ी। संजोग से एक गरीब बाम्हन को मोड़ा, जो कासी से पढ़के निकरो थो, गाँओं पोंहचो। गाँओं बारों ने बाहे मन्दिर को पुजारी बना दओ।

बो रोज पूजा करे, गाँओं से हर रोज एक से एक भोग भगबान के लाने आएँ। पुजारी बढ़िया ठाकुर जी हे भोग लगाए। भगबान तो भाओ के भूँके हें, बे तो खात नईं। सब कछु पुजारीजी ही खाएँ। बढ़िया दूध-दही, खीर-पूड़ी, हलुआ, मालपुआ ओर न जाने का का? पुजारीजी जब झाँ आए थे तो दुबरे-पतरे थे, अब बे खा-खाके मुटा गए। एक बार गाँओं के मुखिया ने पुजारीजी हे देखके कई, "अब हमरे पुजारीजी बड़े हट्टे-कट्टे दिख रए हें, पण्डा पहलबान के घाँई। जब से पुजारीजी की गाँओं भर में पण्डा पहलबान छाप पड़ गई।"

एक बार नागपंचमी के दिना दूसरे गाँओं को एक पहलबान अपनी धोंस जमाबे किसनपुर आओ। बा समय गाँओं बारों की चोपाल पे बेठक लगी थी। जा पहलबान ने आओ देखो न ताओ चोपाल पे जाके मुट्ठे ठोकन लगो ओर कहन लगो, "जा गाँओं में अदि कोई बीर हो तो आके मोसे कुस्ती लड़े।" जा सुनके सब लोग सकपका गए, जो काँ को खूँतो आ गओ। का करें का नईं करें लोग सोचन लगे। इत्ते में फिर बाने चिल्लाके कई, "अदि कोई बीर हो तो मोसे कुस्ती लड़े, नईं तो गाँओं भर के लोग एक-एक करके मेरी दोई टाँगों के बीच में से निकरें।" अब गाँओं भर के सामने जा बड़ी बेज्जती की बात थी। जा पहलबान को डीलडोल देखके गाँओं के कोई भी अदमी की हिम्मत बासे लड़बे की नईं भई। इत्ते में मुखिया ने गाँओं बारों से कई, "अब तो पण्डा पहलबानई हमें जा मुसीबत से बचा सकत हें।" सब लोगों हे जा बात जम गई। मुखिया ने जा खतरनाक पहलबान से कई, "तुम झई रइओ हम तुमरी जोड़ के लाने जा रए हें, अभई लात हें पहलबान हे।" जा पहलबान ने कई, "देर मत करिओ झल्दी अइओ, नईं तो गाँओं में तोड़-फोड़ सुरू कर देहूँ।"

मुखिया ओर गाँओं बारे चल दए मन्दिर। पण्डा पहलबान पूजा करके चबूतरा पे आराम कर रए थे। बिनने सबरे गाँओं बारों हे आत देखे, तो समझे कछु को न्योतो देबे आ रए हुएँ। बे भोत खुस भए। सोचन लगे अच्छे-अच्छे पकबान खाबे मिलहें! मुखिया ने आके पण्डा पहलबान से पालागी करी। पण्डा पहलबान ने पूछी, "का बात हे कुइ के झाँ ब्याओ हे, मिजबान आ रए हें, बताओ तो का बात हे ?" मुखिया ने कई, "गुरूजी बड़ी आफत आ गई हे, अदि गाँओं की इज्जत बच गई तो सब कुसल मंगल रह हे। दूसरे गाँओं को एक खतरनाक पहलबान आओ हे। बाने भरी चोपाल में ललकारो हे, "कोई मेरे से कुस्ती लड़ ले, नईतो सबकी इज्जत धूरा में मिला देहूँ।" पण्डा पहलबान ने कई, "बामे में का करूँ ?" मुखिया ने कई, "गुरूजी हम तुमरे हाथ जोड़ रए हें तुम जाके बासे कुस्ती लड़ो।" पण्डा पहलबान घबरा गओ। बाने कई, "जा तुमरे मन्दिर के हाथ जोड़े, में तो मेरे गाँओं चलो। मोहे झाँ रुकनेई नईहाँ।" गाँओं के बड़े-बूढ़ों ने कई, "पण्डा पहलबान तुम्हें चोपाल तक तो चलनो पड़हे।" मुखिया ने कई, "गुरूजी भलेई बा पहलबान से हाथ मिलाके भग लइयो। काय से जो गाँओं की इज्जत को सबाल हे।" पण्डा पहलबान तैयार हो गओ।

गाँओं बारों के संग बे चोपाल पोंहचे। भाँ पहलबान की मालिस हो रई थी, कारो-कलूटो पहाड़ के घाँई काया। पण्डा पहलबान की तो देखके चुटिया कँप गई। मुखिया ने दूसरे पहलबान से जाके कई, "हमरे गाँओं के पहलबान ने तो तोहे लड़बे लाक नई समझो। बिनने अपने चेला पण्डा पहलबान हे लड़बे भेजो हे। जो भोतई गुस्सेल हे। जो काम अपने गुरूजी से करबे की बोल देत हे, करकेई मानत हे।" सबरे गाँओं बारे मिलके पण्डा पहलबान की मालिस करन लगे। गुदगुदी लगे तो पण्डा पहलबान भगबे के काजे जोर लगाए, जासे कोई गाँओं बारो इते पड़े कोई उते पड़े। जा देख के दूसरो पहलबान सोच में पड़ गओ कि जो तो बड़ो बलबान हे।

कुस्ती सुरू भई तो पण्डा पहलबान ने कई, "मुखिया में तो बोई काम करहूँ।" मुखिया ने कई, "नईं नईं गुरूजी में तुमरे हाथ जोड़ रओ हूँ बो काम मत करियो।" पण्डा पहलबान ने कई, "में ठाकुर जी की सों खाके आओ हूँ, करहूँ तो बोई काम करहूँ।" दूसरे पहलबान ने मुखिया हे बुलाके पूछी, "जो पण्डा पहलबान कुस्ती लड़बे आगे नईं आ रओ, बस एकई रट लगा रओ हे में बोई काम करहूँ ?" मुखिया ने पहलबान हे एक कोना में ले जाके बाके कान में कई, "जो भोतई खतरनाक बाम्हन हे, परसराम के कुल को। जाने अपने गुरूजी से कहके आओ हे आज में कुस्ती लड़बे के पेलेई पहलबान की टाँग पे टाँग धरके चीर देहूँ।"

दूसरो पहलबान जा बात सुनके डर गओ ओर बाने चोपाल छोड़के गदबद लगा दई। सबरे गाँओं बारे पण्डा पहलबान की जय-जयकार करन लगे। मुखिया की हुसियारी से गाँओं की इज्जत बच गई।

# 12 महाठग

एक जीजा के चार सारे रहत हें। जीजा रहत हे नग ओर चारई सारे रहत हें ठग। बे जीजा हे तंगात रहत हें। कभऊँ भी कछु भी माँगबे चले आत हें, भलेई बा चीज जीजा के जोरे होय या न होय। एक बार का भओ चारई सारे जीजा के झाँ रुपया-पईसा माँगबे गए। जीजा ने बिन्हें टरकाबे काजे बोलो, "मेरे जोरे तो फूटी कोड़ी भी नईहाँ। फिर कभऊँ अजइयो, में इन्तजाम करके धरहूँ।"

जीजा के झाँ एक सीकों थो। बा पे एक कुम्हड़ा धरो थो। चारई सारे ने जीजा से पूछी, "जीजा जो सींके पे का धरो हे ?" जीजा बोलो, "हथ्थी को अण्डा हे।" छोटो सारो बोलो, "तबई तो इत्तो बड़ो हे।" बड़ो सारो बोलो, "जीजा जीजा, जामें से हथ्थी के कित्ते पिल्ला निकर हें ?" जीजा बोलो, "भोत सारे ! मूरखों तुम्हें तो जा भी नईं मालुम हुए जिन्दो हाथी लाख को होत हे ओर मरो हाथी सबा लाख को।" सारे बोले, "जो अण्डा तो हमें चइए।" जीजा बोलो, "फोकट में तो में देहूँ ने, काय से जो भोत मेंघो हे।" बड़ी चिक-चिक के बाद, बाने पाँच सो रुपैया में बो अण्डा सारों हे टिका दओ।

बड़ो सारो अण्डा अपने कन्धा पे धरके घर लेके चलो। अण्डा हथो बड़ो भारी। बो पसीना-पसीना हो गओ। एक दरे में बा की धोती उरझ गई ओर बो कुम्हड़ा धम्म से, दरे में गिर पड़ो। बई दरे में सुअर बेठे थे, बे निकर-निकरके भगे। सारे बोले, "सत्यानास हो गओ ! जे हाथी के सबरे पिल्ला भगे जा रए हें, बिन्हें पकड़ो।" बिनने सुअरों के पीछे खूब गदबद लगाई पर एक भी सुअर हाथ नईं आओ। रह गए सबरे अपनो करम ठोंक के।

फिर कछु दिना बाद सारे हुन जीजा के जोरे गए। जीजा ने अपनी घरबारी से कई, "जे फिर कछु जुगत से आए हें। जरूर कछु न कछु मुसीबत खड़ी करहें।" जीजा ने घरबारी हे समझाओ, "में तोहे बेंसई-बेंसई मार हूँ। तू बेहोंस होके गिर पड़िए।" अब जेंसई सारे घर में आए बेंसई बाने अपनी घरबारी की कुटाई करबो सुरू कर दओ। घरबारी बेहोंस होके गिर गई। सारे भोतई गुस्सा होके जीजा से बोले, "हमरी बहन हे काय मार रए हो ?" जीजा बोलो, "तुमरी बहन जब मोहे तंगात हे तो में बाहे ऐंसई पीटत हूँ।" सारों ने अपनी बहन हे हलाके देखी, बा कछु नईं बोली। बिनने जीजा से कई, "तूने हमरी बहन हे मार डाली ?" जीजा ने कई, "रुको !" जीजा झट से अपने कोठा में गओ। उते से एक बाँसुरी उठा लाओ ओर घरबारी के मूढ़ के जोरे बेठके बाँसुरी बजाई, तो घरबारी उठके बेठ गई। सारे देखके हेरान हो गए। बोले, "जो तो गजब हो गओ !" बिनने जीजा से कई, "जा बाँसुरी तो हमें चइए।" जीजा बोलो, "काय के लाने ?" सारों ने कई, "हमरी घरबारिएँ हमें भोत तंगात हें। हम भी उन्हें सुधार हें। जीजा ने कई, "जा बाँसुरी देके का बरबाद हुँ हों ?" सारे बोले, "जीजा जे पकड़ों हजार रुपैया, बाँसुरी तो हम लेकेई जेहें।" जीजा ने रुपैया रखके कई, "ठीक हे, जेंसी तुमरी इच्छा।"

सारे बाँसुरी लेके घर पोंहचे। पोंहचतई से बिनकी घरबारियों से खटपट हो गई। बिनने आओ देखो न ताओ घरबारियों की इत्ती पिटाई करी, की बे बेहोंस हो गईं। बे घरबारियों के मूढ़ के जोरे बेठके भोत देर तक बाँसुरी बजात रए, पर कुई भी होंस में नईं आई। असपताल ले जाके बिनको इलाज कराओ तब बे ठीक भईं। बिनके इलाज में सारों को भोत पईसा खरच हो गओ। गाँओं भर में थू-थू अलग से भई। बे जान गए जीजा ने हमरे संगे भोत बड़ो धोको करो हे। गुस्सा में बे तनतनात बदलो लेबे जीजा के घर चल दए।

जीजा उते तैयार बेठो थो की जे लोग कभऊँ भी आ सकत हें। बाने अपनी घरबारी से कई, "में गेहूँ के कोठला में लुको जा रओ हूँ।" सारों ने आके पूछी, "जीजा काँ हे ? झल्दी बता।" बहन रोत-रोत बोली, "का बताऊँ भइया, तुमरे जीजा हे जेंसई पता चलो की तुमरी घरबारियों हे असपताल ले जानो पड़ो, बे डरके मारे भईं के भईं ठण्डे हो गए। मेंने बिनकी लास उठाके भीतर बारे कोठला में धर दई हे। तुम लोग आ गए हो तो बिनको किरिया-करम भी कर दो।" बड़ो सारो बोलो, "में देख के आत हूँ। कहूँ बास तो नईं आ रई।" जेंसई बाने कोठला में झाँको, जीजा ने चक्कू से बाकी नाक काट दई। बो अपने हाथ से नाक दबाके बाहर भगो। छोटे सारे ने कई, "लग रओ हे सही में बसा रओ हे, में सुई देख के आत हूँ।" जेंसई जाने भी कोठला में झाँको, जीजा ने सट्ट से बाकी भी नाक काट दई। बो भी नाक पे हाथ धरके भगो। ऐंसई कर करके जीजा ने चारई की नाक काट दई। अब तो चारई सारों हे भोत गुस्सा आओ। बिनने कोठला फोड़ो ओर जीजा हे पकड़के बोरा में भर दओ ओर बोरा को मों बाँधके बोले, "जाहे तो नद्दी में फेंक हें।"

चारई ने बोरा उठाके नद्दी की गेल धर लई। नद्दी थी दूर, बोरा ढोत-ढोत बे हेरान हो गए। चारई इत्ते थक गए की बोरा उठात ने बने। बड़ो सारो बोलो, "चलो भइया गाँओं से बेलगाड़ी ले अइएँ।" बिनने उतई गेल में बोरा पटको ओर चल दए गाँओं। बोरा में जीजा तड़फड़ा रओ की केंसे बाहर निकरूँ। इत्ते में भईं से एक डुकरा अपनी बकरियों हे लेके निकरो। बाहे गेल पे बोरा दिखो। बाने बोरा को मों खोलो तो बा में से जीजा निकरो। डुकरा बोलो, "काय भइया तोहे बोरा में कोन ने भर दओ ?" जीजा बोलो, "मेरे रिस्तेदार मेरो दूसरो ब्याओ कर रए ओर में करबाओ नईं चाहूँ। जासे बे मोहे बोरा में भरके जबरजस्ती ले जा रए हें।" डुकरा बोलो, "तुम बड़े भागबान हो जो तुमरो दूसरो ब्याओ भी हो रओ हे। मेरो तो एकई ब्याओ नईं भओ।" जीजा ने कई, "जा तो भोत अच्छी बात हे ! तोहे ब्याओ करबानो हे तो मेरी जिग्गहा जा बोरा में घुस जा।" डुकरा बोरा में घुस गओ, जीजा ने बोरा को मों कसके बाँध दओ ओर बोलो, "अब तो समझ तेरो ब्याओ होई गओ।" जीजा ने बकरिएँ इकट्ठी करी ओर दूसरी गेल से, घेर के अपने घर ले गओ।

इते चारई सारे बेलगाड़ी लेके आए ओर बोरा हे बेलगाड़ी पे धरके चल दए। बोरा में बेठो डुकरा भोत खुस हो रओ की मेरो ब्याओ अभई हो जेहे। बेलगाड़ी नद्दी पोंहची। सारों ने बोरा उठाओ ओर ढिहा पे से झुलाके बोले, "हथ्थी घोड़ा पालकी, जै जीजा लाल की।" ओर बोरा हे भोत गहरे पानी में फेंक दओ।

भाँ से बे अपनी बहन के घर पोंहचे। उते के हाल देखे तो सन्न रह गए। जीजा बकरियों हे पानी पिबा रओ थो। बिन्हें देखके जीजा हँसो। फिर बोलो, "तुम चारई बड़े मूरख हो, तुम लोगों ने मोहे उथले पानी में फेंको तो मोहे जे

बकरिएँ मिलीं। अगर मोहे गहरे पानी में फेंकते तो हथ्थी, घोड़ा मिलते।" चारई बोले, "सही में जीजा!" जीजा बोलो, "जे इत्ती बकरिएँ अपनी आँखों से नईं दिख रईं का!" चारई सारों ने कई, "जीजा हमें भी नद्दी में फेंको। जीजा हमें भी नद्दी में फेंको।" जीजा ने कई, "चलो मेरे संग।"

चारई हे बो नद्दी किनारे ले गओ। पहले बड़े सारे हे बाने झुलाके खूब गहरे पानी में फेंको। बो डूबन लगो तो हाथ पेर फड़-फड़ान लगो। इत्ते में मझलो सारो चिल्लाके बोलो, "जीजा मोहे भी झल्दी फेंक दे, बो अकेलेई सबरे हथ्थी-घोड़ा लूट ले रओ हे।" जीजा ने मँझले ओर सँझले सारे हे, एक-एक करके गहरे पानी में फेंक दए। छोटे सारे की बेरा आई तो बाने कई, "जीजा मोहे भी झल्दी फेंक, बे सबरे लूट ले रए हें।" जीजा ने बा से कई, "अब भाँ का धरो हे, तू तो मेरे संगे चल मेरी बकरिएँ चरइए।"

**मिजबान**
गेल - रास्ता

**मिन्दो मेंढकी की कहानी**
गाँकड़े - बाटी, आटे के गोले
कण्डे पर सेंककर खाते हैं
घेला - मटका
भड़या - चोर

**जेंसे को तेंसा**
मोड़ा-मोड़ी - लड़का-लड़की
गुनिया - ओझा

**लकटकिया**
ढोर - जानवर
खूँतो - गड़बड़ी
मूढ़ - सिर
भुनसारे - अलसुबह
जोरे - पास

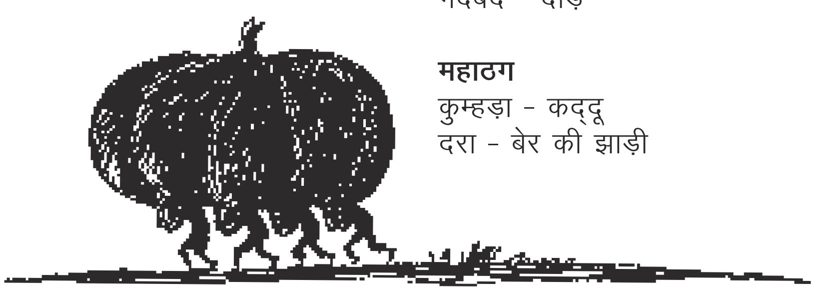

**लल्लू चोर**
चिमाई लगाके - ध्यान लगाके
बर गओ - जल गया
पटमा - घर के अन्दर बना छज्जा
उन्नहा - कपड़ा

**जादुई संख**
बुहारी - झाड़ू
म्यार - लकड़ी के घरों में छत बनाने के
लिए लगाई जाने वाली मोटी लकड़ी।
गोईं - दोस्त
चिलक - चमक
ऐरो - हल्ला
उलात - जल्दी

**पत्ता भर भत्ता**
गरई - भारी
बिट्टया - थक

**दिल्ली की गप्प**
असफेर - आस-पास
तला - तालाब
रिंगके - पैदल चलकर

**चिड़ा-चिड़ी**
सपरबे - नहाने

**मेहनत को फल**
गेरहोंस - बेहोश

**पण्डा पहलबान**
गदबद - दौड़

**महाठग**
कुम्हड़ा - कद्दू
दरा - बेर की झाड़ी

**प्रदीप चौबे**

विगत बीस वर्षों से शिक्षा के लोकव्यापीकरण में जुटे हैं। विभिन्न सृजनात्मक बालगतिविधियों एवं समुदाय के साथ काम करने में दक्ष। वर्तमान में एकलव्य में शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के बाबई क्षेत्र के समन्वयक के रूप में कार्यरत।

**महेश बसेड़िया**

नाटक, ऑरीगैमी, कला, विज्ञान सम्बन्धी गतिविधियों और फोटोग्राफी में विशेष रुचि और अनुभव। एकलव्य में लम्बे समय से कार्यरत।

**अतनु राय**

पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से चित्रांकन में लीन। बच्चों की चित्रकथाओं पर काम करना इनके कैरियर का सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक हिस्सा रहा है। विभिन्न शैलियों और माध्यमों का उपयोग करते हुए सौ से भी ज़्यादा बच्चों की किताबों का चित्रांकन किया है। पुस्तकों का रूपांकन, चित्रांकन और कार्टून बनाने के साथ ही उद्योग जगत के लिए ग्राफिक डिज़ाइनिंग भी करते हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

## एकलव्य एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका ***चकमक*** के अलावा ***स्रोत*** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा ***शैक्षणिक संदर्भ*** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016